भाषा-शिक्षण

कुछ नये विचार-बिन्दु

इन्दिरा 'नूपुर'

नेशनल पब्लिशिंग हाउस
नयी दिल्ली

आमुख

सन् 1961 की एक छोटी-सी घटना याद आ रही है। तब मैं राजकीय महिला इटर कॉलेज, प्रतापगढ मे अग्रेज़ी की प्राध्यापिका थी। एक बार विद्यालय की हिन्दी-अध्यापिका कई दिन की छुट्टी पर थी। मुझसे उनकी छठी कक्षा को हिन्दी पढाने के लिए कहा गया। कुछ असतोष और कुछ झिझक के साथ मैं कक्षा मे गई, तो नन्ही बच्चियाँ मुझसे कहानी सुनाने का आग्रह करने लगी। बच्चियो की कहानी मे इतनी रुचि देखकर मेरे मन मे एक विचार-सा कौध गया—और मैंने उनके परिवेश से सम्बन्धित एक 'सिचुएशन' उनके सामने रखी और उनसे उस कथानक को आगे बढाने को कहा। थोडी ही देर बाद उनके बन्द कलिका-से चेहरे खिल गए और उनकी आखें उत्साह और आवेश से चमकने लगी। कहानी स्वय आगे बढने लगी और समय समाप्त होते-होते कहानी भी समाप्त हो गई। दूसरे दिन वही कहानी पैंतीस बच्चो द्वारा उतने ही ढगो मे व्यक्त की गई।

यह बात तो वही खत्म हो गई, किन्तु मेरे मन मे यह विचार बहुत दिनो तक घुमडता रहा कि ऐसा कुछ प्रयास करू जिससे मेरे इस अनुभव का लाभ अधिक से अधिक लोग उठा सके और इसी विचार के फल-स्वरूप यह छोटी सी पुस्तक आपके सामने है। अपनी प्रतिक्रियाएँ बताएँ, आभार मानूँगी।

—इन्दिरा 'नूपुर'

अनुक्रम

आमुख

सन् 1961 की एक छोटी-सी घटना याद आ रही है। तब मैं राजकीय महिला इटर कॉलेज, प्रतापगढ मे अग्रेजी की प्राध्यापिका थी। एक बार विद्यालय की हिन्दी-अध्यापिका कई दिन की छुट्टी पर थी। मुझसे उनकी छठी कक्षा को हिन्दी पढाने के लिए कहा गया। कुछ असतोष और कुछ झिझक के साथ मैं कक्षा मे गई, तो नन्ही बच्चियाँ मुझसे कहानी सुनाने का आग्रह करने लगी। बच्चियो की कहानी मे इतनी रूचि देखकर मेरे मन मे एक विचार-सा कौध गया—और मैंने उनके परिवेश से सम्बन्धित एक 'सिचुएशन' उनके सामने रखी और उनसे उस कथानक को आगे बढाने को कहा। थोडी ही देर बाद उनके बन्द कलिका-से चेहरे खिल गए और उनकी आँखे उत्साह और आवेग से चमकने लगी। कहानी स्वय आगे बढने लगी और समय समाप्त होते-होते कहानी भी समाप्त हो गई। दूसरे दिन वही कहानी पेतीस बच्चो द्वारा उतने ही ढगो मे व्यक्त की गई।

यह बात तो वही खत्म हो गई, किन्तु मेरे मन मे यह विचार बहुत दिनो तक घुमडता रहा कि ऐसा कुछ प्रयास करूँ जिससे मेरे इस अनुभव का लाभ अधिक से अधिक लोग उठा सके और इसी विचार के फल-स्वरूप यह छोटी-सी पुस्तक आपके सामने है। अपनी प्रतिक्रियाएँ बताएँ, आभार मानूंगी।

—इन्दिरा 'नूपुर'

शिक्षण और मातृभाषा

शिक्षा मानव जीवन के विकास का श्रेष्ठतम साधन है। जीवन की सर्वांगीण सफलता ही शिक्षा का उद्देश्य है, जिसे शिक्षक बालक की सहज एव नियमित, दोनो प्रकार की शिक्षाओ के समन्वय से सफल बना सकता है। अत एक सफल शिक्षक के लिए यह आवश्यक हो जाता है कि वह बालक की शिक्षा को सुलभ बनाने के लिए व्यक्तिगत रूप से बालको का अध्ययन करे, उनकी रुचियो का ज्ञान प्राप्त करे। कक्षा की एकरस शिक्षा बालक को शीघ्र ही उबा देती है और उसके मन मे पाठ एव तत्सम्बन्धी विषय के प्रति अरुचि उत्पन्न हो जाती है।

कोई विद्यार्थी अपनी शिक्षा की कठिनाई का अनुभव करके अन्य विद्यार्थियो से पीछे न रह जाए, और फलस्वरूप हीनता की भावना उसके हृदय मे घर न कर ले, इसकी ओर ध्यान देना शिक्षक का प्रथम कर्तव्य है। उसकी सफलता विद्यार्थी की सफलता मे निहित है। सुन्दर, कलात्मक मूर्ति का सृजन करने वाला कलाकार ही सफल माना जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र मे मातृभाषा के शिक्षक का स्थान विशेष रूप से उल्लेखनीय होता है, क्योकि भाषा तो बालक चलते-फिरते, उठते-बैठते सीखता है और उसके भावो का विकास भी सर्वप्रथम अपनी मातृभाषा मे ही होता है।

वास्तव मे मातृभाषा ही बालक के सम्पूर्ण विकास के लिए उत्तरदायी होती है। उसके व्यक्तित्व का विकास, उसके जीवन की सफलता इसी मे निहित है कि वह अपनी मातृभाषा मे पारगत हो।

'मातृभाषा बालको को अपने पूर्वजो के विचारो, भावो तथा महत्वाकाक्षाओं की समृद्ध धरती से परिचित कराने का सर्वोत्तम साधन है।' जाकिर हुसैन कमेटी की रिपोर्ट मे ऐसा उल्लेख हमे मिलता है। अपनी भाषा का ज्ञान बालक को सामाजिक सफलता भी प्रदान करता है। उसकी सम्भाषण की कला मे निपुणता इसी ज्ञान पर निर्भर करती है।

राइबर्न (Ryburn) का कथन है—"अच्छे नागरिक के गुण, स्पष्ट विचार-शक्ति, अभिव्यक्ति, मन, वचन व कर्म से निष्कपटता, भावात्मक और रचनात्मक जीवन की पूर्णता समुन्नत और सास्कारित तभी किए जा सकते है जब मातृ-भाषा (जो रागात्मक और बौद्धिक जीवन की नीव है) की शिक्षा पर उचित ध्यान दिया गया हो।"

इस प्रकार मातृभाषा ज्ञानोपार्जन एव बालक की प्रकृति के अनुरूप विचार-विनिमय का एकमात्र साधन सिद्ध होती है।

हम आज के युग मे पुरानी मान्यताओ को लेकर नही चल सकते—चाहे वह शिक्षा का क्षेत्र हो, अथवा कोई अन्य क्षेत्र हो। हमे प्राचीन काल के उन शिक्षा सिद्धान्तो को त्यागना

ही होगा जो सर्वथा अमनोवैज्ञानिक विधियो द्वारा ही प्रतिपादित होते थे, जहा शिक्षक अपनी समस्त योग्यता 'येन केन प्रकारेण' बालको के मस्तिष्क मे भर देना चाहते थे। बालको की रुचि-वैचित्र्य तथा मानसिक शक्तियो का ध्यान उन्हे कम ही रहता था, जिसके फलस्वरूप बालको के मन मे अपने गुरु के प्रति श्रद्धा के स्थान पर भय अधिक होता था। वे गुरु के सामने नतमस्तक होते अवश्य थे, किन्तु उनका सिर श्रद्धा से नही झुकता था—वरन् दड के भय से ही वे अनुशासनबद्ध होते थे और इससे जो सबसे बडी हानि होती थी, वह था बालक के स्वाभाविक विकास का अवरुद्ध हो जाना।

भारत मे भी जनतत्र की स्थापना हो जाने के कारण मातृभाषा के शिक्षण का भारतीय शिक्षण-व्यवस्था मे एक प्रमुख स्थान स्वीकार कर लिया गया है। साधारण अर्थो में यदि देखा जाए तो मातृभाषा शिक्षणीय विषय है ही नही, यह तो बालको के जीवन का आधार है। किसी ने ठीक ही कहा है

"Proper teaching of mother tongue is the foundation of all education"

अत शिक्षा के क्षेत्र मे मातृभाषा का एक विशिष्ट स्थान होता है, क्योकि भाषा ज्ञान-प्राप्ति का साधन है, प्राप्त ज्ञान की रक्षा करने मे सहायक है और सुरक्षित ज्ञान को विस्तृत करने का माध्यम है। इस प्रकार भाषा ज्ञान-वाहक और ज्ञान-रक्षक होने के साथ-साथ ज्ञान-वर्द्धक भी होती है। बालक के मानसिक विकास के लिए भाषा-शिक्षण अत्यन्त आवश्यक है। भाषा मे प्रवीण होने का एक लाभ यह भी होता है कि

बालक इसके माध्यम से अन्य विषयों की जानकारी भी आसानी से प्राप्त कर सकता है क्योकि भाषा-शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य होते हैं

1 पढ़ना : अर्थात् बालक किसी लिखे हुए अश को पढ़-कर उसका भाव ग्रहण कर सके।

मातृभाषा के शिक्षक का प्रथम कर्तव्य यही है कि वह बालक की अवस्था और बुद्धि के साथ-साथ वातावरण का भी उचित ध्यान रखे। वाता-वरण के अनुकूल ही धीरे-धीरे उसे बालक की मातृ-भाषा के ज्ञान में वृद्धि करनी चाहिए जिससे बालक की ग्रहण करने की शक्ति का समुचित रूप से विकास सभव हो सके।

2 लिखना अर्थात् बालक अपने मनोभावो को मधुर, आकर्षक, एव प्र[illegible] ढग से लिखकर व्यक्त कर सके।

3 बोलना . अर्थात् बालक अपने विचारो को मौखिक रूप से प्रकट कर सके।

बालक मे अपने विचारो को मौखिक अथवा लिखित रूप से प्रकट कर सकने की क्षमता प्रदान करना ही अभिव्यजनात्मक उद्देश्य की सिद्धि करना है। भा[illegible] की समर्थता के लिए भाषा का मधुर, आकर्षक एव प्रभावशाली होना आवश्यक है। इन गुणो के साथ परिस्थिति का भी अनुकूल होना कुछ कम महत्त्वपूर्ण नही है। अत मातृभाषा के शिक्षक का यह भी एक उद्देश्य हो जाता है कि वह

बालक को इस तथ्य की प्राप्ति के योग्य भाषा का प्रयोग सिखा दें।

रचनात्मक शक्ति का विकास यह सही है कि बालक की रचनात्मक शक्ति का विकास करना पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नही आता, फिर भी छात्रो को मौलिक रचना कर सकने की प्रेरणा भाषा-शिक्षण से प्राप्त हो सकती है।

उपरोक्त सभी उद्देश्यो की पूर्ति तो प्राय सभी अध्यापक एव विद्यालय कर लेते हैं किन्तु रचनात्मक क्षेत्र की उपेक्षा प्राय् कार्यभार से दबे अध्यापक, एव समयाभाव के कारण विद्यालय दोनो ही करने लगते हैं। यह सत्य है कि प्रत्येक छात्र सफल [illegible] नही बन सकता, किन्तु यदि उचित उत्साह एव प्रेरणा प्रदान की जाए और रचनात्मक कार्य के लिए उचित अवसर भी प्रदान किया जाए, तो बालको को अपने गुणो को विकसित करने का सुअवसर अवश्य प्राप्त हो जाएगा। इसके लिए एक ऐसे कुशल अध्यापक की आवश्यकता है जो केवल पाठ्य-पुस्तको का अध्यापन ही कुशलतापूर्वक न कर सके, वरन् जिसका व्यवहार बालको को प्रोत्साहन देने वाला एव उनके प्रति सहानुभूतिपूर्ण हो।

यदि इन सभी उद्देश्यो को प्राप्त कर लिया जाए, तो निःसन्देह मातृभाषा की शिक्षा व्यक्तित्व के सम्पूर्ण विकास मे अधिक सहायता पहुँचा सकती है। यदि बालक की रचनात्मक शक्ति का विकास ठीक प्रकार से न हो पाया, तो उसका ज्ञान अधूरा, उसकी मौलिकता सुप्त और उसकी शिक्षा

अपूर्ण रह जाएगी। ये सभी उद्देश्य परस्पर सम्बद्ध हैं, क्योकि बालक की रचनात्मक शक्ति का विकास उसकी ग्रहण करने एव व्यक्त करने की क्षमता पर निर्भर है। सफल शिक्षण के लिए सभी की पूर्ति आवश्यक है।

2

अध्यापन में बालको की रुचि का महत्त्व

शिक्षा प्राप्त करने तथा ज्ञान की वृद्धि मे वश-परम्परा के सस्कार एव परिस्थितियाँ कुछ हद तक सहायक होती है। बालक स्वभाव से ही अनुकरणशील होता है। वह अपने चारो ओर लोगो को जैसा व्यवहार करते देखता है, स्वय भी उसी प्रकार व्यवहार करने लगता है—अत अनुकरण बालको की शिक्षा की नीव है।

किन्तु बालको मे एक और प्रवृत्ति होती है—उत्सुकता की प्रवृत्ति। अत बालक जिज्ञासावश माता-पिता से अनेक प्रकार के प्रश्न पूछता है, यहाँ तक कि कभी-कभी उनके लिए उसके प्रश्नो के उत्तर देना भी कठिन हो जाता है। बालक को हर नयी वस्तु का ज्ञान प्राप्त करने की उत्सुकता होती है और हर उस काम मे वह प्राणप्रण से जुट जाना चाहता है जिसमे उसकी रुचि होती है। रुचि का शिक्षा के क्षेत्र मे एक प्रमुख स्थान है। किसी ने कहा भी है

"Interest is the greatest word in Education"

जिस काम को करने मे उसका मन लगेगा, उसी का ज्ञान

उसके मस्तिष्क मे स्थायी होगा ।

बालको मे रचनात्मक एव अभिव्यजनात्मक वृत्तियाँ स्वाभाविक रूप से पाई जाती है । उनके गुणो को यदि उचित विकास का आधार मिले तो वे सफल कवि, चित्रकार, लेखक अथवा कलाकार बन सकते हैं ।

आधुनिक शिक्षा प्रणाली मे बालको की स्वच्छदता को अधिक महत्व दिया जाने लगा है । इसीलिए बालको की आरभिक शिक्षा मे खेल द्वारा प्राप्त शिक्षा को स्वीकार कर लिया गया है । कुछ समय से प्रगतिशील शिक्षा-शास्त्री कक्षा-शिक्षण के विरोध मे कार्यरत हैं । उनका कथन है कि कक्षा-शिक्षण मे अनेक प्रकार के दोष आ जाते हैं ।

सर्वप्रथम तो कक्षा का हर बच्चा एक दूसरे से मानसिक, बौद्धिक एव भावनात्मक विकास मे भिन्न होता है । कक्षा-शिक्षण में छात्रों की व्यक्तिगत भिन्नता की ओर उचित रूप से ध्यान देना असभव है ।

दूसरी बात यह है कि कक्षा-शिक्षण मे प्रायः एक ऐसे औसत बालक की कल्पना के आधार पर शिक्षण प्रदत्त किया जाता है, जो वास्तव मे नही के बराबर होता है । फलस्वरूप जो कुशाग्र बुद्धि वाले बालक होते हैं, उनका इस प्रकार के शिक्षण से कोई लाभ नही होता ।

यही नही, जो बालक अपेक्षाकृत कुछ कमजोर होते है, उन्हें लाभ तो होता ही नहीं, कालान्तर में उन्हे शिक्षा से घृणा हो जाती है । वे अपने विषय मे चिन्तित रहते हैं और दुःखी भी ।

तीसरी बात यह है कि कक्षा-शिक्षण में बालक की अपेक्षा

विषय एव अध्यापक का महत्त्व अधिक होता है, और इस कारण बालक के व्यक्तित्व का स्वतन्त्र विकास सम्भव नही हो पाता।

और चौथी बात यह है कि बालक एक क्रियाशील प्राणी है। उसे निश्चल बैठना अच्छा नही लगता। परन्तु कक्षा मे उसे शान्त और मौन होकर बैठने के लिए बाध्य होना पडता है, और इस प्रकार उसके समुचित विकास मे बाधा पडती है।

कक्षा-शिक्षण के इन दोषों को ध्यान मे रखकर ही आज की शिक्षण विधियो मे किंचित परिवर्तन किए गए हैं।

आज की शिक्षा का केन्द्र न विषय है, न अध्यापक। आज की शिक्षा का केन्द्र तो बालक स्वय है। उसकी क्रियाओ का अपना एक महत्त्वपूर्ण स्थान है। आज हम बालक को शिक्षा प्रदत्त करते समय इस बात का विशेष रूप से ध्यान रखने का प्रयास करते हैं कि बालक का वास्तविक जीवन से परिचय अथवा सम्पर्क बना रह सके। वह किसी आदर्श के जाल मे खोकर न रह जाए। और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ही आज यह भी स्वीकार कर लिया गया है कि शिक्षक स्वय प्रशिक्षित होने चाहिए। आज का शिक्षक बालक को तानाशाही ढग से शिक्षित न करके उसके सहायक के रूप मे सामने आता है।

बालक को यह भी सिखाया जाता है कि वह एक सामाजिक प्राणी है, और उसे समाज मे किस प्रकार रहना चाहिए। आज प्रत्येक बालक अपने ढग से सोचने, समझने और कार्य करने के लिए स्वतन्त्र है। भूल होने पर शिक्षक एक आत्मीय

की भाँति आगे बढकर उसका मार्ग-दर्शन करता है। इस प्रकार बालक की रक्षा भी होती है।

कुछ समय पहले बालको को पारितोषक आदि देने की भी प्रथा प्रचलित थी, किन्तु इस प्रथा से कुछ बालको के हृदय मे हीनता की भावना ने जन्म लेना, और फलस्वरूप उनके हृदय मे ईर्ष्या का भाव जागृत होना आरभ हो गया—क्योकि प्रत्येक बालक की क्षमताएँ अलग-अलग होती हैं। किसी मे चित्रकार के गुण पाए जाते है, तो यह आवश्यक नही कि वह अन्य विषयो मे भी पारगत हो। और अन्त मे, आज की शिक्षा की एक विशेष महत्ता का उल्लेख करना आवश्यक हो जाता है—वह यह कि आज पाठ्यक्रम एव पुस्तको पर कम, और बालको की क्रियाओ पर अधिक महत्त्व दिया जाने लगा है।

इसका प्रमाण हमे मोटेसरी पद्धति, बालोद्यान पद्धति, डाल्टन पद्धति, और प्रोजेक्ट अथवा बेसिक पद्धति पर दृष्टि-पात करने से शीघ्र ही मिल जाएगा। इन पद्धतियो मे मोटे-सरी और बालोद्यान पद्धति छोटी आयु के बच्चो के लिए लाभदायक है, और डाल्टन व प्रोजेक्ट पद्धति माध्यमिक कक्षाओ के लिए उपयोगी है। उच्च कक्षाओ मे भी इनका प्रयोग किया जा सकता है।

मोटेसरी पद्धति भाषा-शिक्षण के लिए जो सुझाव डा० मोटेसरी ने दिये है, वे शिक्षण पद्धति को उनकी एक अमूल्य देन है। उनका मत है कि बालक को पहले लिखना, और तब पढना सिखाया जाना चाहिए क्योकि पढने से लिखना सरल होता है, और शिक्षण का एक महत्त्वपूर्ण सिद्धान्त यह भी है

कि हम सरल से जटिल की ओर बढते हैं। इस पद्धति के प्रयोग के लिए किंचित उपकरणो की आवश्यकता होती है, और भारत जैसे देश मे इस पद्धति को हेर-फेर के ही साथ स्वीकार किया जा सकता है क्योकि भारत के पास न तो इतना धन है और न इतना समय ही।

बालोद्यान पद्धति शिक्षक शास्त्री फ्रोबेल का खेल द्वारा शिक्षण का प्रयोग अत्यन्त लोकप्रिय है। समवेत स्वर मे गाए जाने वाले गीत और क्रिया-गीत (action-songs) आनन्ददायक होते है, साथ ही शिक्षाप्रद भी। इस प्रकार के गीत बालको की ज्ञानेन्द्रियो के विकास मे सहायक होते है। इस पद्धति मे गीतो और कहानियो का अपना ही महत्त्व है।

भाषा-शिक्षण मे खेल-विधि का प्रयोग बडा ही उपयोगी सिद्ध हुआ है। जब तक किसी कार्य मे बालक की रुचि नही उत्पन्न होती, वह उसमे किसी प्रकार का आनन्द नही प्राप्त कर पाता। अत कार्य को यदि खेल की भावना से प्रदत्त किया जाए, तो बालक की उसमे स्वाभाविक रुचि अनुप्राणित हो जाती है और वह उस कार्य को शौक से करने लगता है। समस्त आधुनिक प्रणालियो मे खेल द्वारा शिक्षण को प्रदत्त करने की भावना किसी न किसी रूप मे निश्चित रूप से पाई जाती है। किन्तु यह ध्यान रखने की बात है कि खेल अथवा सह-पाठ्यक्रमी क्रियाएँ शिक्षा के साधन-मात्र है, साध्य नही।

डाल्टन पद्धति कुमारी हेलेन पार्खस्ट की इस पद्धति की अपनी विशेषताएँ है। इसमे बालक के व्यक्तिगत कार्य को अधिक महत्त्वपूर्ण समझा जाता है। इसमे पढाई साधारण तौर पर कक्षा को एक प्रयोगशाला मानकर की जाती है। बालक के

ऊपर समय-सारिणी का कोई दबाव नही होता। प्रत्येक विषय मे अलग-अलग अध्यापक प्रयोगशाला के विषय-अध्यापकों के रूप मे होते हैं। बालक स्वय उस अध्यापक की सरक्षता (guidance) मे स्वाध्ययन करता है और स्वतन्त्रता-पूर्वक अपना निर्दिष्ट कार्य (assignment) पूरा करता है।

यह पद्धति केवल मात्र माध्यमिक स्तर के छात्रो के लिए ही उपयोगी हो सकती है।

प्रोजेक्ट पद्धति जॉन ड्यूई द्वारा इसका आविष्कार किया गया था। यह एक समस्यामूलक पद्धति है जो अपनी स्वाभाविक परिस्थितियो मे पूर्णता को प्राप्त होता है। इस पद्धति मे एक प्रोजेक्ट चुन लिया जाता है, और उसी के माध्यम से छात्र को समस्त विषयो का ज्ञान प्राप्त होता है। और इस चुने हुए प्रोजेक्ट के माध्यम से ही भाषा शिक्षण भी होता है।

यह विधि अत्यन्त रोचक और प्रशसनीय है क्योंकि इस विधि द्वारा हम छात्र को जीवनोपयोगी शिक्षा देते हैं। एक प्रकार से इसे अनुभव द्वारा शिक्षण प्राप्त करना (learning by experience) कह सकते हैं।

इन सभी विभिन्न पद्धतियो पर दृष्टिपात करने से निष्कर्ष यही निकलता है कि समस्त आधुनिक शिक्षण-शास्त्रियो ने यही प्रयास किया है कि शिक्षक द्वारा सक्रिय रूप से पढाना और विद्यार्थी द्वारा निष्क्रिय रूप से पढना आदि क्रियाओ की रूढिबद्धता का अनुसरण न करके बालक का पाठ के विकास मे अधिक से अधिक सहयोग प्राप्त किया जाए और बालक का सच्चा सहयोग हमे तभी प्राप्त हो सकता है, जब बालक

को उस पाठ मे रुचि होगी। इसीलिए विषय-वस्तु को इस ढग से प्रस्तुत करने का प्रयास करना भी आवश्यक है कि वह सरल और बोधगम्य होने के साथ-साथ रोचक भी हो। प्रत्येक आधुनिक शिक्षण पद्धतियो के मूल मे चाहे जो अन्त निहित हो, किन्तु ये दो बाते—बालक की रुचि और विषय-वस्तु की सरलता एव रोचकता, प्रत्येक विधि मे पाई जाती है। अत यह कहना अनुचित न होगा कि बालक की शिक्षा मे उसकी रुचि का भी एक महत्त्वपूर्ण स्थान है।

3

शिक्षण और खेल

स्वभाव से ही बालक की रुचि खेल मे अधिक होती है, और यही कारण है कि खेल द्वारा शिक्षण को भी शिक्षण-शास्त्रियो द्वारा स्वीकार कर लिया गया है। वास्तव मे खेल का अपना ही शैक्षिक महत्व है।

सर्वप्रथम तो हम यही देख ले, कि काम के लिए काम कराने मे, और खेल के माध्यम से काम कराने मे क्या अन्तर होता है।

खेल की क्रिया मे आत्म-स्फूर्ति होती है। उसे करने मे बालक को उत्साह होता है, और उसकी रुचि होती है। इसके विपरीत काम को यदि काम के लिए बालक को सौंपा जाए तो वह उसे शिक्षक के द्वारा प्राप्त होने वाले दड के भय से, अथवा अनुशासनबद्ध होने के कारण, मन मारकर, विवश होकर स्वीकार करेगा। और जो काम किसी विवशता मे किया जाता है, वह कभी उतना सुचारु, उतना व्यवस्थित अथवा उतना पूर्ण नही होगा जितना कि रुचि से किया गया कोई काम हो सकता है।

खेल का उद्देश्य कार्य सिद्धि तो होता ही है, साथ ही मनोरजन भी होता है। किन्तु काम मे तो केवल एक उपयोगी उद्देश्य को ही सामने रखकर क्रिया होती है, वहाँ न बालक के मनोरजन का प्रश्न उठता है, न उसकी रुचि का।

खेल द्वारा किए गए काम मे पूरे समय बालक को आनन्द की अनुभूति होती रहती है। काम पूरा हो जाने पर उसका आनन्द दुगुना हो जाता है। किन्तु जहाँ काम 'काम' के लिए किया जाता है वहाँ केवल कार्य की सफलता से ही आनन्द प्राप्त होता है।

खेल द्वारा प्रतिपादित कार्य मे बन्धन कम होते है या यो कहे कि बन्धनो का सर्वथा अभाव होता है। परन्तु काम जब स्वय काम के लिए किया जाता है, तो उसमे नियमो के बन्धन होते है, जो बालक को जबरदस्ती स्वीकार करने ही पडते है।

खेल द्वारा लिए गए काम मे बालक की कल्पना को पॉव पसारकर उडने का सुअवसर प्राप्त होता है, किन्तु काम जब किसी बालक पर मढ दिया जाता है तो वहाँ बालक की कल्पना पगु बनकर रह जाती है।

उपरोक्त विवरण से खेल द्वारा किए गए कार्य की महत्ता स्पष्ट हो जाती है। इस प्रकार खेल का शैक्षिक महत्व भी स्पष्ट हो जाता है, जिसे हम निम्न प्रकार श्रेणीबद्ध करेंगे

(1) रचनात्मक तथा मानसिक शक्तियो का अभ्यास · बालक की कल्पना को जब आगे बढने का अवसर प्राप्त होता है, तो स्वाभाविक ही है कि उसकी रचनात्मक शक्ति को बल

मिलता है और उसके साथ-साथ उसकी मानसिक शक्ति का विकास होता है।

(2) खेल द्वारा प्रतिपादित कार्य मे, कार्य की गम्भीरता कम हो जाती है। काम बालक के लिए एक भार बनकर नही रह जाता।

(3) बालक स्वभाव से ही खेलना पसन्द करता है—अत खेल द्वारा कराए गए काम बालक की प्रकृति के अनुरूप होते हैं।

(4) खेल द्वारा बालक की विभिन्न प्रवृत्तियो एव [illegible] गुणो का भी विकास होता है। विद्यालय मे खेल द्वारा कार्य करते समय बालक की सहनशक्ति, उसकी मैत्री-भावना आदि को विकसित होने का अवसर प्राप्त होता है।

(5) खेल द्वारा कार्य कराने मे शिक्षण विधि भी मनोरजक हो जाती है और शैक्षिक प्रक्रिया भी।

खेल-विधि द्वारा शिक्षा प्रदत्त करने के भी अपने कुछ सिद्धान्त होते हैं।

बालको को पढाने के लिए जो पाठ्यक्रम निर्धारित किया जाता है, वह बहुत महत्त्वपूर्ण होता है। किन्तु उस पाठ्यक्रम को चालू रखने वाली शिक्षण-विधि का भी महत्त्व कुछ कम नही होता। पाठ्यक्रम की सफलता बहुत कुछ शिक्षण-विधि पर भी निर्भर करती है। अत शिक्षण-विधि की रोचकता एव उपयुक्तता का ध्यान रखना आवश्यक है।

जैसा कि हम ऊपर देख चुके हैं, शिक्षण-विधि द्वारा यदि बालको की रचनात्मक एव मानसिक शक्तियो का अभ्यास भी होता चले, तो हम शिक्षण के तीनो उद्देश्यो को पूर्णरूप

से प्राप्त कर सकते है । मौखिक कक्षा-शिक्षण द्वारा बालको का यह विकास सभव नही हो पाता ।

खेल-विधि का एक प्रमुख सिद्धान्त यह भी होता है कि यह स्वशिक्षा है । इसमे बालको को सदाचार, सहयोग, भाई-चारा, सहानुभूति, विषम तथा कठिन परिस्थितियो मे उपयुक्त आचरण तथा धैर्य, विरोधियो का आदर करना आदि कक्षा मे पाठो के रूप मे अथवा उपदेशो के रूप मे नही सिखाये जाते । यह तो बच्चे आपस मे स्वय सीख जाते है ।

इसके अतिरिक्त बालक का ध्यान खेल मे लगा रहता है, और उसकी रुचि विषय के प्रति जागरूक रहती है, फलस्वरूप शिक्षण मे भी उसकी रुचि बनी रहती है ।

और इसका अन्तिम किन्तु मूल सिद्धान्त यह है कि शिक्षक के लिए बालक की मानसिक स्थिति एव व्यक्तित्व का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक हो जाता है । इसका कारण यह भी है कि उसे बालक की मानसिक स्थिति के अनुसार ही रुचिपूर्ण विषयो को उसके सम्मुख प्रस्तुत करना पडता है । इतना ही नही, शिक्षक के लिए यह भी आवश्यक हो जाता है कि वह बालक को अपनी रुचि का पालन करने की पूर्ण स्वतत्रता प्रदान करे । परन्तु इसका तात्पर्य यह कदापि नही, कि बालक इस स्वतत्रता का पालन करके उद्दड हो जाए । उसमे स्वतत्रता के साथ-साथ उत्तरदायित्व वहन करने की भावना एव क्षमता का विकास भी हो—यह शिक्षक का दृष्टिकोण होना चाहिए ।

हमे यह नही समझना चाहिए कि इस विधि से शिक्षक उद्देश्यहीन होगा, वरन यदि देखा जाए तो इस विधि में बालको को सभी कार्य रुचि से, अच्छे व्यवस्थित ढग से करने पडते हैं, अत. प्राय सभी कार्य निपुणता से ही पूर्ण किए जाते हैं।

पढ़ाने के लिए आवश्यक गुण

हम यह मानकर बिलकुल नही चल सकते कि यदि बालक की रुचि पढने मे नही है, अथवा वह पढने से जी चुराता है, कक्षा का कार्य करने से भागता है, या कक्षा मे बैठने से घबराता है, तो इसमे सारा दोष बालक का ही है।

बालक का मन व मस्तिष्क इतना भोला होता है, इतना अपरिपक्व होता है, कि अध्यापक जिस प्रकार चाहे, उसे शिक्षित कर सकता है। बालक तो अध्यापक के लिए वही महत्त्व व स्थान रखता है जो एक सादे पटल का किसी चित्रकार के लिए हो सकता है। जिस प्रकार कलाकार अपनी तूलिका से रग भरकर मनचाहा चित्र उस पटल पर अकित करके सुख पाता है, उसी प्रकार किसी नन्हे बच्चे को छपे हुए अक्षरो के बीच सच और झूठ का, उचित और अनुचित का बोध कराने मे, देश-प्रेम और कविता के अर्थ का बोध कराने मे, और उसमे इतनी योग्यता भर देने मे कि वह स्वयं आपको चकित कर सके, एक कुशल अध्यापक को भी सुख प्राप्त होता है।

कुशल अध्यापक से यह अपेक्षा की जाती है कि उसे अपने

करने लगता है, तो वह अपने अन्दर की स्वतत्र, मौलिक, रचनात्मक भावनाओ को या तो दबाने की कोशिश करने लगता है, अथवा अपनी इन भावनाओ का अपने शिक्षक के अनुरूप सुधार करने लगता है। इससे बालक के स्वतत्र व्यक्तित्व का विकास रुक जाता है। किन्तु इसका अर्थ यह भी नही है कि शिक्षक बालक को अपने गुण सिखाने मे कृपणता दिखाए।

बालक को उचित रूप से मार्ग दर्शाना, उसे पूरा काम और उसे सोचने एव विचार करने के लिए पूरी सामग्री देना अध्यापक का ही काम है।

बालक जब सर्वप्रथम विद्यालय मे आता है उस समय वह अपने चारो ओर के वातावरण से अनभिज्ञ रहता है। अध्यापक ही उसकी मानसिक स्थिति एव स्कूल के वातावरण के बीच सामजस्य स्थापित कर सकता है। और इस उद्देश्य को पूर्ति के लिए कभी अध्यापक को अपने विषय से भटकना नही चाहिए। कठिन से कठिन विषय को बालक बडे उत्साह और लगन के साथ हजार बार याद कर सकते है, यदि अध्यापक मे उस विषय को पढाने का उत्साह एव क्षमता हो। एक कुशल अध्यापक स्वय एक रोचक व्यक्ति होता है, और वह बडी ही कुशलता एव रोचकता से किसी भी विषय को उतना ही रोचक एव सुगम बना सकता है जितने रोचक ढग से वह बच्चो से बाते कर सकता है।

अध्यापक का कर्तव्य यही समाप्त नही हो जाता। उसे तो युवावस्था और परिपक्वता के बीच भी सामजस्य स्थापित करना पडता है। एक कुशल अध्यापक सदा व्यक्तित्व के

विभिन्न स्तरो से जीवन मे शक्ति एव विविधता का सचार कर सकता है। उसे इस बात का पूर्ण ज्ञान रहता है कि वह अपनी वयस्कता को खोये विना ही बच्चो के सम्पर्क मे बाल्य-काल एव तरुणावस्था का अनुभव कर सकता है। अध्यापक इस प्रकार मन व हृदय से जल्दी वृद्ध नही होता, और नन्हे-मुन्नो के सम्पर्क मे उसका जीवन के प्रति आशामय दृष्टिकोण सदा ही बना रहता है।

भृकुटि ताने हुए यदि अध्यापक कक्षा मे जाए तो बालक भले ही उससे डर जाए, भले ही वे उसके स्वागत मे उठकर खडे हो जाए, किन्तु वे उसके प्रति श्रद्धा नही कर सकते। उसे देखकर उनका मन प्रसन्न नही हो सकता। एक सफल अध्यापक के लिए यह भी आवश्यक है कि उसके अधरो पर हास्य स्थित हो। हास्य का यह तात्पर्य नही, कि वह अकारण ही कक्षा मे हँसता रहे, और बालको के विनोद का कारण बन जाए। उसे अपनी कक्षा मे अनुशासन भी रखना है और बालको के स्नेह को भी जीतना है।

दूसरी बात यह है कि अध्यापक को पढाते समय अपनी रचनात्मक शक्ति का उपयोग अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार बच्चो की कठिन से कठिन समस्या आसान हो जाती है। उसका तो काम ही यह है कि पढाते समय अथवा पढाने के बाद भी तथ्यो की सहायता से वह विद्यार्थी के मस्तिष्क मे रोचकता और जिज्ञासा का स्रोत बनाए रहे जिससे वे तथ्य पिछले सीखे गए तथ्यो मे घुलमिल जाए और उनमे ज्ञान आ जाए। आगे चलकर यही तथ्य विद्यार्थी के मस्तिष्क का एक वह महत्त्वपूर्ण भाग बन जाए जिसमे अच्छा ज्ञान-कोष सचित

रहता है।

फिर, एक कुशल एव सफल अध्यापक दृढ प्रतिज्ञ व्यक्ति होता है। उसे समय-समय पर विभिन्न प्रकार की अवरोधक शक्तियो का सामना करना पडता है। सर्वप्रथम तो बालक स्वय ही काम करना पसन्द नही करते। उन्हे किसी के अनुशासन मे जबरदस्ती बधना भी अच्छा नही लगता। एक प्रकार से अराजकता ही उनकी स्वभावगत विशेषता होती है। यही नही, उन्हे मन मारकर कक्षा मे बैठना बडा बुरा लगता है। बडो के बौद्धिक प्रभाव से तो जैसे वे बचकर ही रहना चाहते हैं।

ऐसी दशा मे एक कुशल अध्यापक का क्या कर्तव्य है? यही, कि उनमे अवरोध करने की भावना को प्रोत्साहन दे और फिर उस अवरोधात्मक भावना को एक ठीक दिशा मे मोड दे। इस प्रकार शिक्षा का एक यह भी उद्देश्य पूरा हो जाता है। परन्तु इन सब विरोधो का सामना करने के लिए शिक्षक मे एक और गुण होना अत्यन्त आवश्यक है—और वह गुण है आत्मबल।

शिक्षक को किंचित दयालु होना चाहिए, क्योंकि दया का सहानुभूति से गहरा सम्बन्ध है। यदि बच्चा कोई अपराध भी करे, और उसे इस बात का ज्ञान हो जाए कि वास्तव मे उससे कुछ अनुचित कार्य हो गया हे तो शिक्षक के सामने जाकर जब वह अपने भोले चेहरे और मासूम भाव से अपने अपराध को स्वीकार कर लेता है, उस समय उसे सहानुभूतिपूर्वक समझाने का जो भी प्रभाव बालक पर पडेगा, वह एक प्रकार से स्थायी बनकर रह जाएगा। यदि उससे स्नेहपूर्ण व्यवहार न

करके रोषपूर्ण व्यवहार किया जाएगा, तो बहुत सम्भव है कि बालक के हृदय मे प्रतिरोध एव प्रतिशोध की भावना ही जन्म ले ले।

अत बालको को दोष से देने पहले अध्यापक का यह भी कर्तव्य हो जाता है कि वह स्वय को इस कसौटी पर कसकर देखे कि कही बालक की भूल मे उसका अपना दोष तो नही है।

5

सह-पाठ्यक्रमी क्रियाओं का विवरण

अब प्रश्न यह उठता है कि जब शिक्षण के आरम्भ काल मे बालको की रुचि का ध्यान रखा जा सकता है, तो क्या आगे चलकर उनकी रुचियो के अनुसार ही उनसे कार्य नही करवाया जा सकता ? जब हम यह जानते हैं कि यदि बालक अपनी रुचि के अनुसार ज्ञान प्राप्त कर सके तो वह भविष्य मे भी उसी प्रकार के कार्यो मे भाग लेकर अपने जीवन मे अधिक सफलता प्राप्त कर सकता है, तो हमारा यह कर्तव्य हो जाता है कि शिक्षा के क्षेत्र मे हम उनकी रुचि को भी मान्यता देते चले ।

हम यह मानकर भी नही चल सकते कि विद्यालयो मे बालको की रुचि का ध्यान रखा ही नही जाता, क्योकि वहाँ पर होने वाले उत्सव, वहाँ पर आयोजित किये जाने वाले कार्यक्रम आदि इस बात के प्रतीक है कि विद्यालय मे पाठ्य-क्रम के अतिरिक्त भी कोई ऐसी वस्तु है जिनका विद्यालयो मे एक महत्वपूर्ण स्थान है । वहाँ कभी वार्षिकोत्सव होते है, कभी कोई अतिथि आता है, कभी साहित्यिक गोष्ठियाँ होती हैं— और इस प्रकार बहुत से कार्यक्रम पाठ्यक्रम के अतिरिक्त

भी विद्यालयो मे स्थान पाते हैं और उस समय बालको का उत्साह, उनके कार्य करने की क्षमता और कभी-कभी तो उनकी मौलिकता सराहनीय ही होती है। हमारी आशा के विपरीत वे इतनी सफलता से कार्यक्रमो मे हिस्सा लेते हैं कि हम स्वय उनको इस क्षमता को देखकर दग रह जाते हैं। शिक्षा के उद्देश्यो की प्राप्ति के लिए प्राय. विद्यालयो मे दो प्रकार की क्रियाए होती है

1 **पाठ्यक्रमी क्रियाए** अर्थात् कक्षा मे पाठ्यक्रम के अन्तर्गत आने वाली क्रियाए, जैसे निबन्ध लिखवाना, प्रश्नोत्तर लिखवाना, श्यामपट कार्य कराना आदि।

2 **सह-पाठ्यक्रमी क्रियाए** अर्थात् वे क्रियाए जो पाठ्यक्रम के अन्तर्गत नही आती, किन्तु जिनके कारण बालको को अपने अर्जित ज्ञान का उपयोग करने का अवसर प्राप्त होता है। ये क्रियाए प्राय बालको की रुचि से सम्बद्ध होती है। इन क्रियाओ द्वारा विशेष रूप से बालको को अपनी रचनात्मक शक्ति का विकास करने का सुअवसर प्राप्त होता है।

यह सभी जानते हैं कि अच्छा शिक्षण तभी सभव होता है जबकि शिक्षण-प्रणाली बाल मनोविज्ञान के सिद्धान्तो के अनुसार होती है। इस शिक्षण विधि मे बालक की स्वाभाविक प्रवृत्तियो, उसके वातावरण एव उसकी रुचि आदि का ध्यान रखना अनिवार्य है। शिक्षण का ढग जितना ही अधिक रोचक होगा, बालक के मस्तिष्क पर उसका उतना ही अधिक प्रभाव पडेगा और इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अर्थात् भाषा के शिक्षण को अधिक रुचिकर बनाने के लिए जब हम साधनो एव अन्य

उपकरणो की खोज करने लगते हैं, तो हमारा ध्यान सहज ही सह-पाठ्यक्रमी क्रियाओ की ओर आकर्षित हो जाता है। सह-पाठ्यक्रमी क्रियाए अध्यापक के लिए बहुमूल्य साधन है जिनका प्रयोग प्रचुर मात्रा मे किया जाना चाहिए।

अपनी सुविधा के लिए हम इन भाषा-सम्बन्धी सहपाठ्यक्रमी क्रियाओ को तीन भागो मे बाट लेगे, यद्यपि इनका क्षेत्र बहुत व्यापक होता है, और इनको इस प्रकार विभाजित करना एक कठिन कार्य है। इस विभाजन द्वारा यह प्रयत्न किया गया है कि समान रूप की कई सहपाठ्यक्रमी क्रियाए एक व्यापक कार्य के अन्तर्गत आ जाए और उन्हे एक क्रमिक विकास का रूप दिया जा सके।

1 **पत्रिकाए** यहाँ विद्यालय की उन पत्रिकाओ से तात्पर्य है जिनमे केवल छात्रो की ही रचनाओ को स्थान प्राप्त होता है और प्राय जिसका निरीक्षण-भार अध्यापको के ऊपर होता है। अपने साथ पढने वाले अन्य विद्यार्थियो की रचनाए और प्राय सहवर्ती विषयो पर समान रुचि की पाठ्य सामग्री इन स्कूल-पत्रिकाओ मे होने के कारण इनके द्वारा बालको मे पढने की रुचि विशेष रूप से जागृत होती है।

2 **प्रतियोगिताए :** यह सर्व-विदित है कि स्वस्थ प्रतियोगिता उन्नति का लक्षण है। बच्चे प्रतियोगिता के समय अपना श्रेष्ठतम कार्य दिखाना चाहते है। यहाँ इस प्रकार की प्रतियोगिताओ से तात्पर्य है जैसे लिपि-प्रतियोगिता, वर्ण-विन्यास प्रतियोगिता, निबन्ध

प्रतियोगिता, काव्यपाठ प्रतियोगिता, कहानी प्रतियोगिता इत्यादि, जिनसे बालको को सही शब्द एव सही भाषा लिखने का अभ्यास हो जाता है ।

3 **बालसभाए** विद्यालयो की वे सभाये है जिनमे छात्र अध्यापको के निरीक्षण मे विभिन्न कार्य-कलापो को सम्पन्न करते है । अभिनय, कवितापाठ, वादविवाद परिचर्चा एव अत्याक्षरी आदि मे भाग लेकर सबके सामने खडे होकर बोलने से बालको के मन का सकोच दूर हो जाता है, और उनकी हिचक दूर हो जाती है ।

इन तीनो मे से कोई भी क्रिया ऐसी नही है जो किसी न किसी रूप मे प्राय विद्यालयो मे प्रयुक्त न होती हो । इन तीनो ही क्रियाओ मे भाषा का स्थान प्रमुख होने के कारण इन सबका ही भार भाषा-अध्यापक को वहन करना पडता है । परन्तु भाषा-शिक्षण के सिद्धान्त मे इन क्रिया-कलापो का एक महत्वपूर्ण स्थान बन सकता है ।

सर्वप्रथम तो यदि इन उपकरणो का उपयोग किया जाए तो विषय की रोचकता सहज ही बढ जाती है । अत ये क्रियाए विद्यार्थियो को कार्य मे सल्लग्न रखने मे भी सहायक होती है । यही नही, इन उपकरणो एव क्रियाओ के माध्यम से हम विद्यार्थियो को सूक्ष्म से सूक्ष्म बात बडी आसानी से समझा सकते है क्योकि इन सबका मुख्य सिद्धान्त है बालको को सरल से कठिन की ओर ले जाना । जो कुछ बालक जानता है, जो कुछ वह समझता है, उसी के माध्यम से वह जटिलतम समस्याओ की ओर बढ जाना है । इससे एक लाभ

और होता है—वह यह, कि ये क्रियाए बालक के आत्मशिक्षण मे भी सहायक होती है। बालक उपदेश अथवा पुस्तक मे दिए गए किसी पाठ की तरह ही इन्हे ग्रहण नही करता। वह स्वय प्रयोग करता है, अनुभव प्राप्त करना है, और उस अनुभव के आधार पर वह एक नतीजे पर पहुँचता है। यह ज्ञान उसका स्वअर्जित होता है, अत उसके मानस मे सबसे अधिक स्थायी और प्रखर प्रतिक्रिया होती है।

प्रत्येक मनुष्य के समझने, विचारने और व्यक्त करने की क्षमता अलग-अलग होती है और इसीलिए प्रत्येक व्यक्ति अपने ही निराले ढग से उसकी अनुभूति और अभिव्यक्ति करता है। इसलिए जो बात सिखानी हो या जिस चीज का अभ्यास कराना हो, उसकी शिक्षा आवश्यक रूप से निर्बाध तथा सक्रिय होनी चाहिए। सुझाई अथवा बताई हुई शिक्षा इस क्षेत्र मे बालक के व्यक्तित्व के विकास मे अवरोध उत्पन्न कर सकती है। वास्तव मे बालक का यह विकास अन्धानुकरण के बदले सजीव, आत्मप्रेरित होना चाहिए अर्थात अपनी स्वत प्रेरणाओ एव भावनाओ को पूर्ण करने के लिए बालक स्वय अपने मन से सक्रिय होकर काम कर सके। इस प्रकार कार्य मे बालक की रुचि भी बनी रहेगी, वह शिक्षा भी ग्रहण करता चलेगा और उसमे आत्मविश्वास की भावना भी प्रबल होती चलेगी।

6

पत्रिकाएं

पत्र-पत्रिकाओ का बालको के लिए एक विशेष महत्त्व होता है। 'पराग', 'बाल-भारती', 'चदा मामा', 'नन्दन' आदि को देखकर उनमे प्रसन्नता की लहर-सी दौड जाती है। घर मे पत्रिका आई नही कि वे अपना अन्य सभी कार्य छोडकर उसे पढने मे लग जाते है।

किन्तु विद्यालय की पत्रिका तो उनकी अपनी होती है। जिसमे स्वय उनका अपना, उनके अपने सगी-साथियो का, उनके अध्यापको का, सबका सम्मिलित प्रयास छिपा हुआ है। इसलिए विद्यालय की पत्रिका का बच्चो के लिए कुछ और ही महत्त्व होता है। सहपाठ्यक्रमी क्रियाओ के अन्तर्गत विद्यालय की पत्रिकाएँ बालको मे कई प्रकार के विकास की सभावनाओ को जन्म देती है, जैसे इनसे भाषा विकसित होती है, बालको के विचारो की अभिव्यक्ति के लिए साधन उपलब्ध हो जाता है और उनकी रचनात्मक प्रवृति के विकास के लिए माध्यम मिल जाता है।

बालको की रचनात्मक शक्ति के विकास के लिए अध्यापक

को कुछ विशेष जागरूक और अतिरिक्त परिश्रमी होना अपेक्षित है। कक्षा मे उन्मुक्त वातावरण बनाए रखने के लिए उसे अपनी प्रतिक्रियाओ को प्रकट करने मे सयमित रहना पडेगा और अपने दृष्टिकोण को प्रगतिशील और उदार बनाना पडेगा। बालको को लेखन-प्रवृति के लिए मानसिक रूप से तैयार करने के लिए भी उसे प्रयत्नशील होना पडेगा।

स्कूल-पत्रिकाओ के माध्यम से बालको के विकास मे—विशेष रूप से जहाँ तक मातृभाषा का सम्बन्ध है—कई प्रकार की सहायता पहुँचाई जा सकती है, और जिनका वर्गीकरण निम्नलिखित ढग से किया जा सकता है

1 कुछ बालको मे लेखक अथवा आलोचक बनने की अन्तर्हित प्रतिभाए होती है—और यदि उन्हे उचित प्रोत्साहन और अवसर प्राप्त हो तो वे कवि, कलाकार, लेखक अथवा सम्पादक बन सकते है। उन्हे पत्रिका मे समय-समय पर प्रकाशित होने वाले लेखो के अनुरूप अपनी आकाक्षाओ अथवा अपने भावो को अभिव्यक्त एव निर्मित करने मे सहायता मिल सकती है।

2 पत्रिकाओ के माध्यम से बालको मे भाषा-सम्बन्धी सौन्दर्यानुभूति का भी विकास किया जा सकता है। विद्यालय की पत्रिका उनकी अपनी होने के कारण उससे उनकी निकटता बनी रहती है और वे उस पत्रिका मे प्रयुक्त शब्दो, वाक्यो तथा भाषा के सौन्दर्य को विशेष रूप से अनुभूत कर सकते है।

3 विद्यालय पत्रिका मे लिखने का अवसर प्राप्त होने के

कारण उनकी कल्पनाशक्ति एव वर्णनात्मक शक्ति का भी समुचित विकास हो सकता है। यदि बालको को किसी भ्रमण के लिए विद्यालय की ओर से ले जाया गया हो, तो उनसे उस भ्रमण का विवरण लिखवाया जा सकता है, और साथ-साथ उनकी वर्णनात्मक शक्ति तथा उनकी भाषा का विकास किया जा सकता है।

4 उनके विचारो को परिस्थितियो एव देश-काल की आवश्यकतानुसार ढाला जा सकता है। भारत की सकटकालीन परिस्थितियो मे बालक किस प्रकार अपना सहयोग दे सकते है, आज के बालको को देश के लिए क्या करना चाहिए आदि ऐसे विषय है जिन पर विचार करने अथवा लिखने का अवसर देकर उनके विचारो को यथासम्भव परिस्थितियो के अनुकूल ढाला जा सकता है।

5 प्रत्येक छात्र की अपने विचारो को व्यक्त करने की शैली एव क्षमता अलग-अलग होती है। पत्रिका के लिए समय-समय पर लेख लिखते रहने पर उनकी व्यक्तिगत लेखन-शैलियो को भी विकास का अवसर मिल जाता है।

6 पत्रिका मे प्रकाशित अन्य लेखो, कहानियो व कविताओ को पढने पर उन्हे विभिन्न शब्दो के सौन्दर्य को परखने का, तथा नये शब्दो से परिचित होने का भी सुअवसर प्राप्त हो जाता है।

7 इस प्रकार शब्दो के सही रूप को बार-बार देखने

और पढने से उन्हे अपनी वर्ण-विन्यास सम्बन्धी भूलो को सुधारने का भी अवसर मिल जाता है ।

8 पत्रिका द्वारा उन्हे साहित्य की प्राय सभी विधाओ, उसके विभिन्न रूपो यथा कविता, कहानी, लेख, नाटक, आदि का भी सामान्य ज्ञान हो जाता है ।

9 पत्रिका मे सूक्तियो के संकलन द्वारा छात्रो मे चरित्र-निर्माण, आत्मविश्वास, धैर्य, श्रद्धा, निष्ठा तथा सहानुभूति आदि गुणो को भी परिष्कृत किया जा सकता है ।

10 यदि पत्रिका हस्तलिखित हो, और प्रत्येक बालक को अपना लेख स्वय उस पत्रिका के लिए विशेष कागज़ पर लिखना हो, तो उसे अपना लेख सुधारने और सुन्दर बनाने की भी प्रेरणा प्राप्त हो सकती है ।

पत्रिकाओं का स्वरूप

कुछ बालको मे प्रतिभा होती है, परन्तु उन्हे उचित वातावरण और अपेक्षित प्रोत्साहन नही मिल पाता तो उनकी प्रतिभा कुठित होकर रह जाती है । भाषा अध्यापक ही एक ऐसा व्यक्ति होता है जो छात्रो की इस प्रतिभा तथा उनकी इस क्षमता के पूर्ण विकास मे सहायक हो सकता है ।

विद्यालय से प्राप्त होने वाली सुविधाओ, परिस्थितियो तथा छात्र के मानसिक स्तर को ध्यान मे रखकर पत्रिकाए कई प्रकार की निकाली जा सकती हैं । हर पत्रिका का अपना एक विशिष्ट महत्त्व होता है ।

बच्चो के लिए हस्तलिखित पत्रिकाए भाषा शिक्षण की

दृष्टि से अधिक उपयोगी हैं। इन हस्तलिखित पत्रिकाओ के निम्नलिखित स्वरूप हो सकते हैं :

1 **कक्षा-पत्रिका** · विद्यार्थियो को अपनी-अपनी कक्षाओं की अलग-अलग पत्रिकाए निकालने के लिए प्रोत्साहित किया जा सकता है। ये पत्रिकाए मासिक, छ मासिक अथवा त्रैमासिक हो सकती हैं। प्रत्येक कक्षा के छात्रों मे इस प्रकार प्रतियोगिता की भावना आ जाती है और हर कक्षा के छात्र अपनी-अपनी पत्रिका को अच्छी बनाने का प्रयास करते हैं।

इन कक्षा पत्रिकाओ के लिए कुछ विषयो पर लेख लिखवाए जा सकते हैं और उनमे से सबसे उत्तम लेख को पत्रिका मे स्थान दिया जा सकता है। लेखो के विषय इस प्रकार के हो जो उनकी ज्ञान की परिधि की सीमा मे हो। छोटे बच्चो के लिए इनमे से कुछ विषय इस प्रकार के हो सकते हैं

पाठशाला मे मेरा पहला दिन

जब मैंने आइसक्रीम खाई

मेरी रेल-यात्रा

जब मैंने नाव से नदी पार की, आदि।

इस प्रकार के विषय बालको के जीवन मे सीधे रूप में सम्बद्ध होते हैं, और वे इन विषयो पर स्वच्छन्द रूप से लिख सकते है।

प्राय माध्यमिक कक्षाओ के छात्र स्वतः मौलिक रचनाए नही कर पाते, किन्तु यदि उन्हे उचित रूप से प्रोत्साहन दिया जाए अथवा उनका मार्गदर्शन किया जाए तो निश्चय

ही प्रतिभा का अकुर पनप सकता है। उन्हे कहानी लिखने के लिए कहानी का आरम्भ बताया जा सकता है, और उस अधूरी कहानी को वे स्वय अपनी कल्पना द्वारा पूरी कर सकते हैं।

कविताए लिखना इस आयु के बच्चो के लिए बहुत कठिन कार्य है। फिर भी उन्हे कविता की एक पक्ति देकर समस्या-पूर्ति के लिए उत्साहित किया जा सकता है। भाषा-अध्यापक फिर उनके भावो मे विशेष परिवर्तन किए बिना शब्दो के हेर-फेर से उसे सुन्दर रूप दे सकते हैं। बालको के लिए कविताओ के विषय प्रकृति, आसपास के वातावरण से सम्बन्धित जीवन, खेल-कूद, परिवार आदि जन-जीवन से सम्बन्धित होने चाहिए।

2 **कक्षागत-सूचनापट-पत्रिका** सप्ताह मे एक बार प्रत्येक कक्षा के बालकों द्वारा लिखित रचनाओ मे से सर्वोत्तम रचना को यदि हम सूचना-पट-पत्रिका रूप में सबके सामने लाए, तो इससे बालको को कुछ लिखने का, कुछ पुस्तको को पढकर उनसे विभिन्न विषयो से सम्बद्ध सुन्दर पक्तियो को सकलित करने का प्रोत्साहन मिल सकता है। इस सूचना-पट पत्रिका से बालको मे स्वस्थ स्पर्धा की यह भावना बनी रहती है कि इस सप्ताह किस की रचना चुनी जाएगी, और इस प्रकार उनको लिखने की, और साथ-साथ पुस्तक पढने की प्रेरणा मिलती रहती है। इस प्रकार की पत्रिका मे विशेष आयोजन भी किए जा सकते हैं— जैसे गाधी जयन्ती के अवसर पर गाधीजी के जीवन

से सम्बन्धित लेख, उनकी जीवनी के कुछ शिक्षाप्रद और मनोरजक स्थल, भारत के विषय मे उनका स्वप्न (कि हमारा भारत कैसा हो ?), आदि लिखवा कर लगाए जा सकते है ।

इस विधि की विशेषता यह है कि अधिक झझट उठाए बिना ही यालको को लिखने का अभ्यास कराने का उद्देश्य भी पूरा हो जाता है ।

3 **विशेष अध्ययन पत्रिका** माध्यमिक कक्षा की पाठ्य-पुस्तको मे कुछ कवियो का उल्लेख अनिवार्य रूप से पाया जाता है । तुलसी, कबीर तथा मीरा की रचनाए उन्हे आरम्भ से ही पढाई जाने लगती है । इस प्रकार कक्षागत विशेष अध्ययन पत्रिका मे किसी एक कवि को लेकर उसके काव्य के विभिन्न पक्षो पर विभिन्न छात्रो द्वारा लेख लिखवाकर एक विशेष अध्ययन-पत्रिका सम्मिलित रूप से तैयार कराई जा सकती है । तुलसी का भक्ति पक्ष, सूर का बाल-लीला वर्णन आदि ऐसे विषय है जिन पर लेख लिखाए जा सकते है । इस प्रकार की पत्रिका का लाभ यह होगा कि कुछ विद्यार्थियो के सतत प्रयास का लाभ पूरी कक्षा के विद्यार्थी उठा सकेंगे, और एक प्रकार से अन्य छात्रो की भी अध्ययन मे रुचि जागृत हो सकेगी ।

4 **रुचि-पत्रिका :** कुछ छात्रो को सूक्तियो का सकलन करने की, कुछ छात्रो को किन्ही विषयो पर कविताओ का सकलन करने की, कुछ छात्रो को गीतो के सकलन करने की, रुचि होती है । ऐसे विद्यार्थियो द्वारा उनके

अवकाश के क्षणो मे उनकी रुचि को पत्रिका तैयार करवाकर उन्हे उचित प्रोत्साहन दिया जा सकता है। इस विषय मे अध्यापक भी कुछ सुझाव दे सकते हैं। इन रुचि-पत्रिकाओ के विषय इस प्रकार के हो सकते हैं

मेरी पसन्द के खेल-कूद
मेरी रुचि के गद्य-गीत
मेरी रुचि की राष्ट्रीय कविताए
मेरी रुचि के गीत
मेरी रुचि के चुटकले
मेरी रुचि के कवि, और उनकी रचनाएं
मेरी रुचि की लोक-कथाए
मेरी रुचि की परी-कथाए
मेरी रुचि की सूक्तियाँ—आदि।

चित्र-पत्रिका यह पत्रिका विशेष रूप से छठी तथा सातवी कक्षा के विद्यार्थियो के लिए लाभदायक है। छोटे बालको से उनकी रुचि के अनुसार भिन्न-भिन्न प्रकार के जानवरो, पक्षियो, फूलो, वृक्षो, फलो आदि के चित्र इकट्ठे करवाकर उन्हे किसी कापी मे चिपकाने का आदेश दिया जा सकता है। फिर उन बच्चो से उन चित्रो के सम्बन्ध मे कुछ पक्तियो का वर्णन, अथवा यदि उन्हे उस चित्र से सम्बन्धित कोई कविता याद हो तो वह, अथवा उस चित्र का उपयुक्त शीर्षक आदि लिखने का आदेश दिया जा सकता है।

विद्यालय-पत्रिका उपरोक्त पाँचो प्रकार की

पत्रिकाओ मे से छाटकर सर्वोत्तम लेखों, कविताओं, कहानियो, सूक्तियो आदि को संकलित करके विद्यालय-पत्रिका मे स्थान दिया जा सकता है। जिस विद्यालय मे कई कक्षा-पत्रिकाए निकलती हों, वहाँ यह कार्य और भी आसान हो जाता है।

यह विद्यालय पत्रिका कम से कम वार्षिक और मुद्रित होनी चाहिए। इस पत्रिका के दो भाग किए जा सकते हैं। प्रथम भाग में कक्षा 9 से 11 तक के विद्यार्थियों की रचनाए और द्वितोय भाग मे, जिसे 'बाल-विभाग' कहा जा सकता है, माध्यमिक कक्षा के छात्रो की उत्तम रचनाए छापी जा सकती हैं।

इस पत्रिका के विशेषाक—त्रैमासिक अथवा छमाही—के रूप में भी निकाले जा सकते हैं।

पत्रिका के उप-विभाग

पत्रिका के कई विभाग किए जा सकते हैं। कुछ पृष्ठ कहानियों के लिए, कुछ कविताओं के लिए, कुछ लेखों के लिए, कुछ एकांकी-नाटक, संगीत-नाटिका अथवा कथोपकथन (डायलॉग) के लिए, कुछ सूक्ति-सकलन आदि के लिए आसानी से दिए जा सकते हैं। पत्रिका की विविधता बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है और इस प्रकार बालको की विभिन्न रुचियो को भी ध्यान मे रखा जा सकता है।

(अ) कहानी बालक स्वभावत कहानी सुनने, कहानी कहने, कहानी पढने, और यदि उनके लिए सभव हो, तो कहानी लिखने मे भी रुचि रखते हैं। वास्तव मे

कल्पना की उड़ान उनकी अनेक वृत्तियो को तृप्त करने का साधन होती है। कहानी के नायक अथवा नायिकाओ के माध्यम से उन्हे अपनी भावनाओ के विकास का अवसर मिलता है। कहानियो द्वारा उनकी जिज्ञासा भी शान्त होती है।

विद्यालय-पत्रिका के लिए बालको को किस प्रकार की कहानिया लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है—यह विचार करने की बात है। ये कहानियां काल्पनिक, लोक-कथाए, सामाजिक अथवा मनोवैज्ञानिक हो सकती हैं। हिन्दी बाल-साहित्य मे अनेक जीवनिया प्राप्य हैं। ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, पडित नेहरू, महात्मा गाधी आदि के जीवन से सम्बन्धित कुछ घटनाए बच्चो को सुनायी जाए और उनसे उनके अपने शब्दो मे लिखवाया जाए, तो इस प्रकार उन्हे लिखने के लिए सामग्री भी मिल जाएगी, और उन्हे कहानी लिखने की कला का भी ज्ञान हो जाएगा।

इसके अतिरिक्त बालको को कहानी के लिए मौखिक रूपसे उत्साहित किया जा सकता है। बालको को कक्षा मे कहानी रचना के लिए उपयुक्त स्थिति देकर, मौखिक रूप से उनसे उस कहानी का विकास कराया जा सकता है। जब कहानी कक्षा के सम्मिलित प्रयास से पूरी हो जाए, फिर उनसे अपनी अभ्यास पुस्तिकाओ मे लिखने का आदेश दिया जाए। इस इस प्रकार भी बालको को कहानी लिखने की विधा का ज्ञान कराया जा सकता है।

बालको को अलग-अलग अधूरी कहानी देकर, उनसे उसे भी पूरा कराया जा सकता है। इस प्रकार कहानिया लिखना सिखाने के कई उद्देश्य हो सकते हैं .—

(क) मनोरजन के साथ-साथ बालको का मानसिक विकास हो सके।

(ख) उनकी कल्पना-शक्ति का विकास होता चले।

(ग) साहित्य-सृजन और पठन के प्रति उनकी रुचि परिष्कृत होती जाए।

(घ) उनकी भाषा तथा भाव-व्यजना उत्कृष्ट हो।

(ङ) उन्हे अपने भावो तथा उद्‌गारो को व्यक्त करने का अवसर प्राप्त हो।

पत्रिका के लिए कहानिया चुनते समय भी कुछ बातो की ओर ध्यान रखना चाहिए। बालक यदि मौलिक कहानिया न लिख सके तो उनसे अन्य भारतीय भाषाओ आदि की कहानियो का अनुवाद भी कराया जा सकता है।

पत्रिका के लिए कहानिया चुनते समय निम्न-लिखित बातो का ध्यान रखना चाहिए .

(क) कहानी जीवन के उन पक्षो को उभारकर सामने ला सके, जिससे बालको को कुछ करने की प्रेरणा प्राप्त हो सके।

(ख) कहानी मे ऐसी कल्पना हो जिससे बालको की कल्पना-त्मक शक्ति का विकास हो सके।

(ग) कहानियो के पात्र परिस्थितियो पर विजय प्राप्त करते हो और मानवीय भावनाओ के सरक्षक हो।

(घ) कहानियाँ अनूदित हो—किन्तु किसी भी प्रकार नकल की हुई कहानी को पत्रिका मे स्थान देकर बालको की गलत भावना को विकसित नही होने देना चाहिए।

पत्रिका के लिए सम्पादक किसी ऐसे छात्र को बनाना चाहिए जो नियमित रूप से पत्र-पत्रिकाए पढता हो और पुस्तकालय मे जाता हो। अन्यथा भाषा-अध्यापक को ही यह दायित्व उठाना चाहिए।

(ब) **कविता** बच्चो के लिए प्राय वही कविताए उपयोगी होती है जो उनके मन को भाए, जिसमे लय, ताल व छन्द हो, और जिन्हे वे कठस्थ करके समय-समय पर खेलकूद के समय भी, गुनगुना सके।

बच्चो के लिए छन्दो की तुक मिलाना, अपने भावो को सही-सही ढग से पद्य मे व्यक्त कर सकना, एक कठिन एव दुष्कर कार्य है। किन्तु यदि प्रयास किया जाए तो बालको से इस क्षेत्र मे भी कार्य कराया जा सकता है।

कविता लिखना सिखाने के लिए सबसे उपयुक्त तरीका यही है, कि उनसे समस्या पूर्ति कराई जाए। किसी कविता की एक पक्ति देकर उनसे उससे आगे एक या दो पद लिखने के लिए कहा जा सकता है। विद्यार्थियो की इन रचनाओ के छन्द, मात्रा आदि अध्यापक को ठीक करने होगे, किन्तु इस बात का ध्यान रखना आवश्यक है कि उनके परिपक्व विचारो की छाप बालको की रचनाओ पर न लगने पाए।

पत्रिका मे अच्छे कवियो की सुन्दर रचनाए भी प्रारभ अथवा अन्त मे दी जा सकती हैं।

एक आवश्यक बात ध्यान देने की यह भी है कि कविता-विभाग के सम्पादक को बालको के मूल-भावो की रक्षा करने के लिए प्रयत्नशील होना चाहिए । बाल-कवियो को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता होती है, । इसलिए अच्छा हो यदि इस विभाग का सम्पादक कोई कवि-अध्यापक ही हो ।

माध्यमिक कक्षाओ के लिए कविता सृजन के उपयुक्त कुछ विषय निम्नलिखित हो सकते है

(क) प्रकृति चित्रण से सम्बन्धित कोई विषय ।

(ख) हँसो, हँसाओ ।

(ग) प्रयाण-गीत (सामूहिक गान)

(घ) देश-भक्ति की कविताए आदि ।

(स) **निबन्ध** विद्यालय की पत्रिका मे कुछ लिखकर देने का तात्पर्य केवल कविता अथवा कहानी लिखकर देने से नही है । बालको को निबन्ध लिखना सिखाना भी एक कला है । इससे विचारो को परिपक्वता मिलती है और उन्हे एक सुव्यवस्थित ढग से अपने विचारो को व्यक्त करना आ जाता है । उनमे किसी भी विषय के पक्ष और विपक्ष मे सोचने की क्षमता आ जाती है, और इस प्रकार उनकी तर्क-शक्ति का भी विकास होता है ।

पत्रिका के लिए निबन्ध लिखवाते समय कुछ बातो को ध्यान मे रखना आवश्यक होता है

(क) पत्रिका के लिए लिखे जाने वाले निबंन्ध ऐसे विषयो पर होने चाहिए जो अधिकाश विद्यार्थियो की रुचि के हो ।

(ख) इस निबन्धो को ज्ञानवर्धन की दृष्टि से भी महत्त्व-

पूर्ण होना चाहिए।

(ग) पत्रिका के लिए निबन्ध लिखते समय बच्चो को विषय चुनने की छूट होनी चाहिए। इस प्रकार बच्चे अपनी रुचि के विषयो पर उत्साहपूर्वक निबन्ध लिख सकेंगे।

(घ) इन निबन्धो के कुछ प्रकार निम्नलिखित हो सकते हैं :—

1 मेरे जीवन का लक्ष्य
2. यदि मैं प्रधान मत्री होता
3 कोई मनोरजक स्वप्न
4 पहाड की एक शाम
5 नदी किनारे सूर्यास्त
6 कलम बनाम तलवार
7 बगाल मे दुर्गा-पूजा—आदि।

(ड) नाटक पत्रिका मे विभिन्नता लाने की दृष्टि से उसमे एक नाटक अथवा वार्तालाप को स्थान देना भी उपयुक्त होगा।

यह ठीक है कि नाटक लिखने के लिए एक भिन्न प्रकार के अनुभव की आवश्यकता होती है, और नाटककार को मानव-हृदय की भावव्यजना का पूर्ण ज्ञान होना चाहिए। किन्तु विद्यार्थियो को नाटक की रचना करने की प्रेरणा देने के लिए सर्वप्रथम उन्हे वार्तालाप लिखने के लिए प्रेरित किया जा सकता है। कक्षा मे वार्तालाप लिखवाने के लिए सर्वप्रथम जो बात बालको को समझानी होगी वह यह है कि वार्तालाप मे भी उतनी ही स्वा[illegible] होनी चाहिए, जितनी

उनकी आपस मे बात-चीत करते समय होती है।

इसके लिए उपयुक्त होगा कि बालको को ऐसे विषय दिए जाए जिनसे उनकी कल्पना-शक्ति का विकास होने के साथ-साथ ज्ञान की वृद्धि भी हो। वे उन विषयो पर पक्ष और विपक्ष दोनो पर समान रूप से विचार कर सके।

इनमे से कुछ विषय निम्नलिखित हो सकते है :

1 मेरी (हॉबी) रुचि : एक मित्र दूसरे के पास जाए और उसे चित्र बनाते हुए, अथवा पढते हुए देखे, तो उसकी रुचि के विपक्ष की बाते सामने रखते हुए उससे अपने साथ पिकनिक, अथवा सिनेमा जाने के लिए आग्रह करे। दूसरा मित्र सिनेमा के विपक्ष मे बाते करते हुए पुस्तके पढने का लाभ समझाते हुए उसे कुछ पुस्तके पढने की प्रेरणा दे। इस प्रकार स्वाभाविकता रखते हुए उन्हे वार्तालाप लिखने का ढग सिखाया जा सकता है।

2 हवा और पानी।

3 गाय और घोडा आदि।

जब बच्चो को इसका अभ्यास हो जाए, तब उनसे दो से अधिक पात्रो की बातचीत लिखवाने का अभ्यास कराया जा सकता है। इस सम्बन्ध मे अध्यापक को रगमच निर्देश या तो स्वय देने पडेगे, या फिर बच्चा को रगमच निर्देश लिखने की कला सिखानी पडेगी। नाटक लिखवाने के लिए उत्तम होगा यदि उनकी पढी हुई कहानियो का रूपान्तर करना उन्हे सिखाया जाए।

(**ब**) **सूक्तियां संकलन** पत्रिका मे सूक्तियों का एक अपना

स्थान होता है। सभी बालको मे मौलिक रचनाए करने की क्षमता होनी आवश्यक नही है। परन्तु इसका तात्पर्य यह नही है कि उन कुछ बालको के अतिरिक्त, जिनमे मौलिक रचना करने की योग्यता है, अन्य सभी बालको को हतोत्साहित किया जाए।

मौलिक रचना करने के स्थान पर उन्हे सूक्तियो का, सुन्दर गद्यगीतो का, सुन्दर उद्धरणो आदि का सकलन करने की प्रेरणा दी जा सकती है। किसी एक विषय को देकर उस पर भिन्न भिन्न लेखको अथवा विद्वानो के विचार एक करने का सुझाव भी उन्हे दिया जा सकता है।

इस प्रकार के कार्य करने से बालको की रुचि पढने मे बढेगी और वे अधिक पुस्तके एव पत्रिकाए आदि पढेगे।

इस सम्बन्ध मे निम्नलिखित बातो का ध्यान रखना आवश्यक है

1 सूक्तियाँ विश्वबधुत्व को बढाने वाली तथा सामाजिक आधार एव शील सिखाने वाली हो।
2 इन सूक्तियो द्वारा सहानुभूति, सहनशीलता, प्रेम, सद्भाव व्यवहार-कुशलता आदि बाते सिखाई जा सके।
3 सूक्तिा ज्ञानवर्धक, विचारोत्तेजक, चरित्र-निर्माण मे सहायक, साहसी तथा अन्वेषी बनाने वाली, तर्क और विवेक को विकसित करने वाली और सरलता और उच्च विचारो का पोषण करने वाली होनी चाहिए।
4 इस विभाग का सम्पादक विद्यालय के छात्रो को

छोटी-छोटी नोटबुक मे प्रति सप्ताह सूक्तियां लिखने की प्रेरणा दे और बाद मे उन्हें एकत्र करके उनमें से कुछ अच्छी सूक्तिया छाटकर पत्रिका मे सकलनकर्ता के नाम के साथ दे सकता है।

5 इस विभाग के लिए छात्रो द्वारा चुटकुले, पहेलिया, तथा अन्य ज्ञान बढाने वाली सामग्री भी एकत्रित कराई जा सकती है।

(इ) **विविध :** यह पत्रिका का अन्तिम छोर है जिसमे बालको की विशेष प्रगति का (जैसे किसी वाद-विवाद प्रतियोगिता मे विजयी होने का, किसी कैम्प मे शामिल होने का, विद्यालय के वार्षिक खेल-कूद के उत्सवो आदि का) उल्लेख किया जा सकता है। इस विभाग के अन्तर्गत बाल-सभा आदि का प्रतिवेदन दिया जा सकता है।

7
प्रतियोगिताएं

प्राय सभी विद्यालयो मे समय-समय पर अनेक प्रकार की प्रतियोगिताए आयोजित की जाती हैं। इन प्रतियोगिताओं का आयोजन अध्यापक के निर्देशन मे होता है। प्रतियोगिताओ द्वारा बालको मे स्वस्थ स्पर्धा की भावना जागृत होती है, और उनके ज्ञान की भी वृद्धि होती है—वे प्रथम स्थान प्राप्त करने की आकाक्षा मे अधिक उत्साह से भाग लेते हैं और अधिक ज्ञान भी अर्जित करते हैं। उनकी रुचि भी विषय की ओर बढ जाती है और धीरे-धीरे वे पढाई मे अधिक ध्यान देने लगते हैं। कक्षा मे प्रथम आना, विद्यालय मे अच्छा छात्र कहलाना, अथवा पुरस्कार पाना आदि ऐसी बाते हैं, जिनसे बालको को प्रोत्साहन मिलता है।

ये प्रतियोगिताए भाषा-शिक्षा की दृष्टि से कई प्रकार की हो सकती हैं :—

(अ) **लिपि-प्रतियोगिता** . बालकों की लिपि के सुन्दर और स्वच्छ होने का बडा महत्त्व होता है। छात्र के पास यदि भाषा सुन्दर हो, भावो की भी कमी न हो, और

लिपि स्वच्छ व सुन्दर न हो तो परीक्षा मे उसे उतने अक प्राप्त नही होते जितने उसे मिलने चाहिए। लिपि सुन्दर बनाने के निम्नलिखित उपाय हो सकते हैं :

(क) उन्हे अक्षरो के बनाने का सही ढग ज्ञात हो जाए।

(ख) यदि वे निब से लिखते हो, तो उन्हे यह ज्ञात हो जाए कि अग्रेजी और हिन्दी लिखने के लिए किन-किन निबो का प्रयोग करना चाहिए।

(ग) वे अपने भावो को सही ढग से पाठक के पास पहुँचा सके।

(घ) बालक की लिपि सुन्दर और स्वच्छ होगी, तो पाठक को चाहे वह अध्यापक हो अथवा कोई और, उसे पढने मे रुचि उत्पन्न होगी।

उपरोक्त उद्देश्यो की पूर्ति के कुछ उपाय जिनका प्रयोग किया जा सकता है, निम्नलिखित हैं :

(क) समय-समय पर कक्षा के बालको की लिपि-प्रतियोगित का आयोजन किया जाए। कम समय मे सब से सुन्दर, शुद्ध और स्वच्छ लिखने वाले बालको को क्रमश प्रथम, द्वितीय एव तृतीय घोषित किया जाए।

(ख) जिस बालक की लिपि सर्वोत्तम हो उससे दीवार-पत्रिका के लिए लेख लिखवाया जाए।

(ग) जिन बालको की लिपि सुन्दर हो, उनसे हस्तलिखित पत्रिका लिखवाकर उनके नाम पत्रिकाओ मे अवश्य देने चाहिए।

(घ) विद्यालय के वार्षिक उत्सव के समय होने वाली प्रदर्शनी मे कक्षा के जिस बालक की लिपि सर्वोत्तम

हो, उससे कुछ लिखवा कर प्रदर्शन के लिए रखा जा सकता है ।

(ड) जिन बालको की लिपि सुन्दर हो उनसे कुछ सुन्दर शिक्षाप्रद सूक्तिया लिखवाकर कक्षा मे, अथवा विद्यालय मे ऐसे स्थान पर लगाई जा सकती है, जहा आते-जाते बालको की दृष्टि उस पर पड सके ।

(ब) **वर्ण-विन्यास प्रतियोगिता** भाषा शिक्षण मे वर्ण-विन्यास का एक महत्वपूर्ण स्थान है । कक्षा की पाठ्यक्रमी क्रियाओ द्वारा अनेक प्रकार से वर्ण-विन्यास सम्बन्धी भूलो का सुधार किया जाता है, किन्तु सहपाठ्यक्रमी क्रियाओ द्वारा भी हमे इस दिशा मे सफलता प्राप्त हो सकती है ।

(1) वर्ण-विन्यास प्रतियोगिता से तात्पर्य है, कि कुछ फ्लेश कार्ड पर वर्णमाला के सभी अक्षर और मात्राए आदि कक्षा के बालको से बनवा ली जाए । फिर कक्षा के कुछ छात्रो को एक समूह मे बैठा दिया जाए। जब हर एक बालक उल्टे रखे हुए कार्डो मे से एक कार्ड उठाए । दूसरा बालक दूसरा कार्ड उठाकर सामने रखे और इस प्रकार कम से कम तीन अक्षरो का एक शब्द बनाए । इस प्रकार बच्चो का शब्द-ज्ञान भी बढेगा और यदि वर्ण-विन्यास की अशुद्धिया होगी तो वह भी सही हो जाएगी ।

(2) फ्लेश-कार्ड पर अक्षर लिखकर भी उस अक्षर से आरम्भ होने वाले अनेक शब्द, जिनका उन्हे ज्ञान है उनसे लिखवाए जा सकते है ।

(स) **कहानी-प्रतियोगिता** कहानी-प्रतियोगिता मे भाग लेने के लिए अनेक प्रकार से बालको को उत्साहित किया जा सकता है। यह एक ऐसा विषय है जिसमे उनकी स्वाभाविक रुचि होती है। इन प्रतियोगिताओ को आयोजित करने के कई ढग हो सकते हैं ·

(1) किसी दी हुई रूपरेखा के आधार पर कहानी का विकास करना इसमे कक्षा के सभी बालको को किसी एक कहानी की रूपरेखा बना कर दी जाए और उनसे उसे अपने-अपने ढग से अलग-अलग लिखने को कहा जाए। इस प्रकार जितने बालक कक्षा मे होगे, उतने प्रकार के भावाभिव्यजन के साथ-साथ एक ही कहानी अनेक रूपो मे अध्यापक के सामने आएगी। इन कहानियो मे से सर्वोत्तम कहानी को विद्यालय की किसी पत्रिका मे स्थान दिया जा सकता है।

(2) अधूरी कहानी-प्रतियोगिता कहानी का आरम्भ किसी मनोरजक स्थिति अथवा किसी अन्य ढग से करके बालको के सामने रख दिया जाए। फिर बालक अपनी-अपनी कल्पना-शक्ति के अनुसार उनका विकास करे। सर्वोत्तम कहानी को दीवार-पत्रिका के लिए प्रयोग मे लाया जा सकता है।

(3) कहानी-पूर्ति प्रतियोगिता कहानी का अन्त इसी प्रकार बच्चो को बताकर उनसे कहानी का आदि और मध्य भाग पूरा कराया जा सकता है। इस प्रकार उनकी कल्पना-शक्ति का विकास भी होगा, और अभिव्यक्ति को भी सही दिशा मिलेगी।

(4) चित्रमय कहानी कुछ घटना-प्रधान कहानियो के चित्र क्रम से कक्षा मे टाग दिए जाए और बालको से उन चित्र को देखकर कहानी लिखने को कहा जाए। इससे बालको की निरीक्षण शक्ति के साथ-साथ वर्णनात्मक शक्ति का भी विकास हो सकता है।

(द) **कविता-प्रतियोगिता** यो तो काव्य रचना करने की अपेक्षा गद्य लिखना अधिक सरल होता है। परन्तु बालको मे यदि प्रतिभा हो, तो उसको विकसित करना अध्यापक के ऊपर निर्भर करता है। बालको को कविता लिखना सिखाने के कई उद्देश्य हो सकते है

(1) उनमे छन्द, लय, मात्रा और ताल का ज्ञान बढता है।

(2) अपनी भावनाओ को छन्दबद्ध करने से उनका शब्द-ज्ञान भी बढता है, क्योकि शब्द की तुक मिलाने के लिए उन्हे उससे मिलते-जुलते अनेक शब्द खोजने पडते है।

(3) उनमे कविता की सराहना करने की शक्ति का भी विकास होता है।

(4) उन्हे एक ऐसे सृजन का आनन्द प्राप्त होता है जिसे वे समय-समय पर अन्य लोगो को सुनाकर उनका मनोरजन कर सकते है, और अपना ज्ञान बढा सकते है।

(5) उन्हे नयी-नयी उपमाओ आदि को खोजकर उनका प्रयोग करने का भी अवसर प्राप्त होता है।

(6) उनकी रचनात्मक शक्ति का विकास होता है। इन

उद्देश्यो की पूर्ति के तरीके भी विभिन्न प्रकार के हो सकते हैं ।

(क) बच्चो को किसी सरल विषय पर एक पक्ति लिख कर दे दी जाए, और फिर उस पक्ति के आगे कुछ पद जोडने के लिए कहा जाए । इन सब कविताओ मे से बहुप्रशसित रचना पर पुरस्कार भी दिया जा सकता है, और उसे पत्रिका मे तो स्थान मिलना ही चाहिए ।

(ख) कुछ उपमाए और कुछ उपमान देकर उनके सम्बन्ध मे पद्य मे कुछ पद बालको से बनवाए जा सकते है ।

(ग) बालको की स्वरचित अन्य कविताओ को भी प्रति-योगिता के लिए आमन्त्रित किया जा सकता है ।

(घ) बालको को कक्षा मे कुछ विषय देकर उन पर भी काव्य-रचना का प्रयास कराया जा सकता है ।

(ङ) छात्रो को कक्षा मे विभिन्न वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है । और उन्हे विभिन्न प्रकार की पक्तियो के आधार पर कविता की रचना करने के लिए कहा जा सकता है । फिर एक वर्ग की रचना दूसरे वर्ग को सुनाई जाए और श्रेष्ठ रचना पर पुरस्कार वितरण का आयोजन हो ।

(इ) **आशु-भाषण प्रतियोगिता** : कक्षा के बालको से आशु-भाषण करवाने के कई उद्देश्य हो सकते हैं

(क) उन्हे अपने विचारो को भाषा देनी आ जाती है ।

(ख) अपने सहपाठियो के सामने खडे होकर बोलने से

उन्हे विद्यालय के अन्य बालका के सामने बोलने
मे भी झिझक नही होगी ।

इन उद्देश्यो की पूर्ति के लिए आशु-भाषण कराने के निम्नलिखित तरीके उपयोगी हो सकते हैं

(क) छोटी-छोटी चिटो पर कुछ विषय लिख दिये जाए । फिर उन चिटो को अध्यापक अपनी मेज पर उलटा करके रख ले । बालक एक-एक करके वहा आए और एक चिट उठाएँ । जो भी विषय उस चिट मे लिखा हो, उस पर वे कम से कम तीन मिनट और अधिक से अधिक पाच मिनट तक बोले ।

(ख) किसी एक ही विषय के पक्ष और विपक्ष मे भी बालको से बोलने का आग्रह किया जा सकता है परन्तु आशु-भाषण के लिए समय का नियमित होना आवश्यक है ।

(ग) इन सभी प्रकार से भाषणो पर जो बालक सबसे अधिक सफलतापूर्वक बोल सके, उसे पुरस्कार देने की योजना होनी चाहिए '

(ई) **अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता** यह सुन्दर, भावपूर्ण कविताओ तथा अन्य शिक्षाप्रद दोहो को कठस्थ करने का श्रेष्ठ माध्यम है । बालक बडी रुचि से कविताओ को याद कर लेते हैं और बहुत प्रभावशाली ढग से उन्हे श्रोतागण के सम्मुख प्रस्तुत कर सकते है । अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता

का आयोजन करने से बालको को वाणी के सही उतार-चढाव के साथ कवितापाठ करना भी आ जाता है।

यह प्रतियोगिता निम्नलिखित ढग से आयोजित की जा सकती है

(क) कक्षा-गत अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता कक्षा के समस्त बालको को दो वर्गों में बाटकर यह प्रतियोगिता कराई जा सकती है।

(ख) एक ही कक्षा के दो विभिन्न वर्गों मे इस प्रतियोगिता का आयोजन किया जा सकता है।

(ग) एक ही विद्यालय की दो कक्षाओ मे—सातवी और आठवी मे—इस प्रतियोगिता का आयोजन करना भी सभव है।

(घ) अन्य विद्यालयो के कुछ छात्रो को (दोनो विद्यालयो के छात्रो का एक ही कक्षा मे होना आवश्यक है) भी आमन्त्रित करके इस प्रतियोगिता को आयोजित किया जा सकता है।

अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का आयोजन करते समय कुछ बातो का ध्यान रखना आवश्यक है

(क) बालको को स्वस्थ रचनाए कठस्थ करने की प्रेरणा देनी चाहिए।

(ख) केवल तुकबन्दिया मात्र याद करने के लिए बच्चो को हतोत्साहित करना ही उचित है।

(ग) इस प्रतियोगिता मे बालक केवल विजयी होने के दृष्टिकोण से भाग न ले, वरन् उन्हे इस बात के

लिए सचेत करना आवश्यक है कि वे एक दृष्टि-कोण से शिक्षित भी हो रहे हैं।

(ङ) **काव्यपाठ-प्रतियोगिता** कविता को पढने का भी एक उचित ढग होता है। कविता को भावपूर्ण ढग से उचित आरोह-अवरोह के साथ पढना सिखाना इस प्रतियोगिता का उद्देश्य है। यो तो अन्त्याक्षरी प्रति-योगिता मे कुछ हद तक काव्यपाठ करना भी बालको को आ जाता है, किन्तु फिर भी पूरी कविता को प्रभावशाली ढग से पढकर या उसका सस्वर पाठ करके सुनाना भी एक कला है। और इस प्रतियोगिता का मुख्य आशय यही है कि बालको को इसका सही ज्ञान हो जाए।

काव्य पाठ प्रतियोगिता का आयोजन भी लगभग उसी ढग से किया जाता है, जिस प्रकार अन्त्याक्षरी प्रतियोगिता का अयोजन किया जाता है। इसमें अन्तर यही होगा कि यह बालको की व्यक्तिगत क्रिया होगी।

इन सभी प्रतियोगिताओ का लक्ष्य एक ही है—वह यह कि बालको मे स्वस्थ स्पर्धा का भाव जागृत हो, और वे अधिक से अधिक रुचि लेकर भाषा सीखने का प्रयास करे। भाषा–शिक्षण मे अभिव्यक्ति, लिपि, वर्णविन्यास और रचनात्मक प्रवृत्ति—किसी का भी स्थान गौण नही कहा जा सकता। अत. भाषा-अध्यापक को इन सब की ओर उचित ध्यान देना है। इन प्रतियोगिताओ द्वारा बालको मे शिक्षा के

प्रति अधिक रुचि जागृत की जा सकती है, इन प्रयत्नो के प्रयोग से कक्षा मे जीवन भी रह सकता है और भाषा के प्रति बालको तथा अध्यापको की रुचि भी बनी रह सकती है।

बाल-सभा

बाल-सभा प्राय· बालको की एक स्वतत्र सस्था होती है। जो अध्यापको से समय–समय पर सुझाव, परामर्श आदि प्राप्त करके उनकी अध्यक्षता मे अपना कार्य सम्पन्न करती है। विद्यालयो के लिए इस प्रकार की सीमाए कुछ नयी नही हैं। किसी न किसी रूप मे विद्यालयो मे ये अवश्य आयोजित की जाती हैं।

इस प्रकार की सभाए बालको के प्रजातात्रिक शिक्षण मे सहायक होने के साथ-साथ उनमे उत्तरदायित्व की भावना का विकास करने मे भी समर्थ होती है। विद्यालयो मे प्रमय समय-समय पर कुछ न कुछ समारोह होते रहते है, जिनका आयोजन प्राय बाल-सभा ही करती है।

बाल-सभा द्वारा आयोजित कार्यक्रमो के कुछ उप-विभाग किए जा सकते हैं।

(अ) **अभिनय** अभिनय बाल-सभा के प्रमुख कार्यो मे से एक है। शिक्षा का एक पक्ष यह भी होता है कि बालको को पाठ्य-पुस्तको के अतिरिक्त अन्य पुस्तके

पढने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बच्चो को यदि यह मालूम होता है कि उन्हे अमुक दिन बालसभा में आमन्त्रित अतिथियो, अथवा स्कूल के अन्य अध्यापको एव छात्रो के सम्मुख अभिनय प्रस्तुत करना है तो वे अत्यत उत्साह से कितने ही एकाकी नाटक पढ डालते है। फिर उन नाटको मे से किसी एक नाटक को छाटकर आपस मे ही पात्रो आदि का चुनाव कर लेते है। स्वय ही वे वेश-भूषा आदि का भी प्रबन्ध करते है। इन सबसे स्पष्ट है कि वे नाटक खेलना भी पसन्द करते है, और देखना भी। वे उसकी सराहना भी कर सकते हैं और आलोचना भी। मातृभाषा की शिक्षा की दृष्टि से अभिनय कराने के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है

(1) बालको की सराहना-शक्ति का विकास हो सके।
(2) उनकी आलोचनात्मक प्रवृत्ति का विकास हो सके।
(3) उन्हे कथोपकथन कहते समय स्वर के आरोह-अवरोह का ज्ञान हो सके।
(4) वे समुचित ढग से भावाभिव्यक्ति कर सके।
(5) उनमे से कुछ छात्रो को नाटक पढने के बाद स्वय सृजन की भी प्रेरणा मिल सके।

उपरोक्त उद्देश्यों की पूर्ति के लिए निम्नलिखित उपायो से काम लिया जा सकता है।

(क) बालको को नये-नये एकाकी नाटक पढने के लिए, और उनमे से किसी एक नाटक को छाटनें के लिए कहा जाए। फिर बालको से यह पूछा जाए कि

पढने के लिए प्रेरित करना चाहिए। बच्चो को यदि यह मालूम होता है कि उन्हे अमुक दिन बालसभा मे आमन्त्रित अतिथियो, अथवा स्कूल के अन्य अध्यापको एव छात्रो के सम्मुख अभिनय प्रस्तुत करना है तो वे अत्यन उत्साह से कितने ही एकाकी नाटक पढ डालते है। फिर उन नाटको मे से किसी एक नाटक को छाटकर आपस मे ही पात्रो आदि का चुनाव कर लेते हैं। स्वय ही वे वेश-भूषा आदि का भी प्रबन्ध करते है। इन सबसे स्पष्ट है कि वे नाटक खेलना भी पसन्द करते है, और देखना भी। वे उसकी सराहना भी कर सकते है और आलोचना भी। मातृभाषा की शिक्षा की दृष्टि से अभिनय कराने के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है

(1) बालको की सराहना-शक्ति का विकास हो सके।

(2) उनकी आलोचनात्मक प्रवृत्ति का विकास हो सके।

(3) उन्हे कथोपकथन कहते समय स्वर के आरोह-अवरोह का ज्ञान हो सके।

(4) वे समुचित ढग से भावाभिव्यक्ति कर सके।

(5) उनमे से कुछ छात्रो को नाटक पढने के बाद स्वय सृजन की भी प्रेरणा मिल सके।

उपरोक्त उद्देश्यो की पूर्ति के लिए निम्नलिखित उपायो से काम लिया जा सकता है।

(क) बालको को नये-नये एकाकी नाटक पढने के लिए, और उनमे से किसी एक नाटक को छाटने के लिए कहा जाए। फिर बालको से यह पूछा जाए कि

किन कारणो से उन्होने उस नाटक-विशेष को चुना है।

(ख) उनसे यह भी पूछा जाए कि अन्य नाटको में क्या कमी है, और उन्हे वे पसन्द क्यो नही आए।

(ग) उनसे नाटक-विशेष को लिखने का, और अभिनीत करने का उद्देश्य भी पूछा जा सकता है।

(घ) उनसे नाटक मे पात्रो के विषय मे भी पूछा जा सकता है कि कौन—सा पात्र उन्हे अच्छा लगा है और क्यो? यह भी पूछा जा सकता है कि यदि कोई पात्र उन्हे अच्छा नही लगा है तो उसका कारण क्या है।

(ङ) इसी प्रकार की अनेक स्थितियाँ उनके सामने रखकर उनसे कथोपकथन अथवा नाटिकाएँ भी लिखवाई जा सकती हैं।

(च) अभिनय के क्षेत्र मे एकाकी नाटको के अभिनय के अतिरिक्त एकालाप (monologue) भी कराए जा सकते हैं। एकालाप द्वारा बालको को स्वर के सही उतार-चढाव के साथ-साथ भिन्न-भिन्न पात्रो का अभिनय करना भी आ जाता है।

(छ) एकालाप के अतिरिक्त मूक अभिनय भी करवाए जा सकते है। मूक अभिनय के लिए सशक्त शब्दो मे उसका वर्णन भी बालको से लिखवाया जा सकता है।

(ब) **कविता-पाठ :** कविता-पाठ एक गुण है। कविता पढने के उचित ढग पर उसका अर्थ समझना और उसकी सराहना कर पाना भी निर्भर करता है। कविता-पाठ करने का यह भी उद्देश्य है कि कविता के प्रति उनकी

रुचि जागृत हो सके। यदि बालको को रोचक, सरस एव शिक्षाप्रद कविताए कठस्थ हो, और वे लय, स्वर, ताल एव गति के अनुसार शब्दो का ठीक-ठीक उच्चारण करते हुए पाठ करे तो उसका सौन्दर्य दूना हो जाता है।

कविता पाठ करते समय बालको को अपनी भाव-भगिमा और सकेतो आदि को भी अपने ध्यान मे रखना चाहिए और इसका उचित निर्देशन अध्यापक ही उन्हे दे सकते है। बार-बार कविता-पाठ करने, और बार-बार कविता-पाठ सुनने से कविता स्पष्ट तथा प्रभाव-शालिनी होती है। इसके साथ ही इस क्षेत्र मे बालको की रुचि भी बढेगी।

इस क्षेत्र मे निम्नलिखित उपायो को प्रयोग मे लाया जा सकता है

(1) **कवि-दरबार :** छात्रो मे से किसी को तुलसी, कबीर, सूर, मीरा, जयशकर प्रसाद, महादेवी वर्मा आदि का अभिनय करने के साथ–साथ उनकी रचनाओ का सस्वर-पाठ करने के लिए कहा जा सकता है। इस कवि-दरबार का सयोजक कोई बाल-कवि ही होना चाहिए।

(2) **कवि-सम्मेलन :** छात्रो की स्वरचित कविताओ को प्रोत्साहन देने के लिए बाल-कवियो का एक सम्मेलन आयोजित किया जा सकता है। इस कवि-सम्मेलन का सयोजक भी कोई बाल-कवि ही होना चाहिए।

(3) **काव्य-पाठ** किसी भी कवि की रचना का सस्वर

पाठ बालको द्वारा बाल-सभा मे कराया जा सकता है ।

(स) **कहानी सुनाना :** बाल-सभा मे बालक स्वरचित तथा अन्य कहानिया अन्य बालको के सामने प्रस्तुत कर सकते है । इस प्रकार की कहानिया प्रस्तुत करवाने के लिए कुछ बातो का ध्यान रखना आवश्यक है

(1) कहानी मनोरजक और स्वाभाविक हो ।

(2) कहानी बहुत लम्बी न हो, अन्यथा श्रोतागण ऊब जाएगे ।

(3) कहानी मे उत्सुकता का अश अवश्य हो जिससे श्रोताओ की रुचि उसमे अत तक बनी रहे ।

(4) कहानी पढने का ढग प्रभावोत्पादक हो ।

(5) कहानी मे कथोपकथन अधिक और वर्णन कम हो ।

(6) कहानी की भाषा सीधी और सहज हो ।

(7) कहानी मे बहुत अधिक पात्र न हो ।

(8) कहानी मे बहुत अधिक घटनाए भी एक साथ घटित न होती हो ।

(9) कहानी का वातावरण स्वच्छद हो अर्थात् बालको के परिवेश से सम्बन्धित हो ।

इस प्रकार की स्वरचित कहानियो के अतिरिक्त बालको से उनकी पढी हुई अन्य कहानिया भी बाल-सभा मे सुनाने के लिए कहा जा सकता है ।

(द) **आज की ताजा खबर :** इस कार्यक्रम के अन्तर्गत छात्रो से उस दिन की विशेष घटना, कोई विशेष समाचार अथवा स्कूल से सम्बन्धित अन्य कुछ

विशेष उल्लेखनीय बात का विवरण बाल-सभा के सामने दिलाया जा सकता है।

इस कार्यक्रम के उद्देश्य निम्नलिखित हैं

(1) बालक अपने चारो ओर के वातावरण मे रुचि रखें और उल्लेखनीय घटनाओ के प्रति सजग रहे।

(2) बालको को समाचार-पत्र पढने मे और उसे पढकर उल्लेखनीय घटना का अपने शब्दो मे वर्णन करने मे रुचि जागृत हो सके।

(3) बालको की वर्णन करने की शक्ति का विकास हो।

(4) किसी समूह के सामने बोलने का उनका सकोच दूर हो जाए।

(ड) **वाद-विवाद** : बाल-सभाओ मे बालको को कुछ समय पहले किसी विषय के पक्ष अथवा विपक्ष मे बोलने के लिए तैयार किया जाए। फिर सभा मे उन्हे एक-एक करके पक्ष और विपक्ष मे बोलने के लिए कहा जाए।

इस प्रकार के वाद-विवाद का आयोजन करने के निम्नलिखित उद्देश्य हो सकते है

(1) बालको को तर्कशील बनाना।

(2) अपने दृष्टिकोण को प्रभावशाली और युक्तिपूर्ण ढग से अभिव्यक्त कर सकना।

(3) निबन्ध के शिक्षण मे पक्ष-विपक्ष पर विचार करने तथा किसी निर्णय तक पहुचने के लिए इनका सहारा लिया जा सकता है।

(4) विचार-विमर्श कर सकना।

(5) विरोधियो के दृष्टिकोण को समझना और देखना ।

(6) विपक्षियो के प्रति उदार दृष्टिकोण रख सकना ।

(7) प्रत्येक विषय और उसके विभिन्न विजयो का विभिन्न अगो का और उनक उपायो का गहन अध्ययन कर सकना ।

विविध—इन सबके अतिरिक्त विविध के अन्तर्गत कुछ अन्य आयोजन भी दिए जा सकते हैं। इन आयोजनो के निम्नलिखित प्रकार हो सकते हैं

(1) कुछ मनोरजक पहेलिया बालक पूरे समूह के सामने रखे और उनके उत्तर मागे ।

(2) कुछ स्वस्थ हास्य का सृजन करने वाले चुटकुले इकठ्ठे करके समूह के सामने सुनाना ।

(3) कुछ मनोरजक घटनाओ का वर्णन सुनाना ।

(4) कुछ अच्छी सूक्तिया पढ़कर सुनाना ।

(5) महापुरुषो के कहे गए सुन्दर अशो को पढकर सुनाना ।

(6) महापुरुषो की जीवनी के कुछ रोचक सस्मरण सुनाना आदि इन सब प्रकार के कार्यो के द्वारा सभा का कार्य सुचारु रूप से चल सकेगा और भाषा की प्रवीणता के साथ-साथ बालको के ज्ञान की भी वृद्धि होती चलेगी ।

9

कुछ अन्य सुझाव

इस पुस्तिका मे दिए गए कार्यकलापो के अतिरिक्त कुछ अन्य प्रकार के भी कार्य है जो बालको से कक्षा मे अथवा यदि सभव हो तो बाल-सभा आदि मे कराए जा सकते है। इनका उद्देश्य एक ही है—कि रुचिकर ढग से बालको को भाषा की शिक्षा दी जा सके और वे कक्षा के नीरस वातावरण से ऊब न जाए। भाषा सीखने मे उनकी रुचि बनी रहे। वे कुछ साधारण ज्ञान की बाते भी सीख जाए और कक्षा मे जीवन बना रहे—यही इन क्रियाकलापो का विशेष तात्पर्य है।

ये निम्नप्रकार के हो सकते है

(1) शब्द एक, अर्थ दो

इसमे शब्दो की जगह रिक्त स्थान छोडकर आगे उन शब्दो के दो-दो अर्थ लिख दिए जाते है। फिर बालको द्वारा मौखिक अथवा लिखित रूप से उसकी पूर्ति कराई जा सकती है। इसमे उत्तर भी दे दिए गए है

क्रम	शब्द	अर्थ	उत्तर
1	...	शरीर, घड़ा	घट
2	..	किरण, हाथ	कर
3		गेहूँ, सोना	कनक
4		पत्ता, कागज	पत्र
5		कपूर, चन्द्रमा	सुधाशु
6		श्रीकृष्ण, सावला	श्याम
7		ओहदा, पैर	पद
8		मृत्यु, समय	काल
9		धन, मतलब	अर्थ
10		बिजली, लक्ष्मी	चपला
11		दूध, पानी	पय
12		शराब, शहद	मधु
13		गोद, चिन्ह	अक
14		मार्ग, सम्प्रदाय	पथ
15		शरीर, हिस्सा	अग

(2) शब्दो की समस्या-पूर्ति

1	रक	तारा	तारक
2	रक	करने वाला	कारक
3	रक	हीरा नामक रत्न	हीरक
4	रक	प्रेरिक करने वाला	प्रेरक
5	रक	कली	कोरक
6	रक	जीरा	जीरक
7.	रक	पूरा करने वाला	पूरक
8	रक	स्वर्ग का विपरीत शब्द	नरक

(3) **पहेलियां**

इसके लिए बालको को दो या अधिक दलो मे बाट दिया जाता है। एक दल किसी वस्तु का नाम लिए बिना उसका वर्णन गद्य अथवा पद्य मे करता जाता है, और दूसरा दल उसे पहचानने का प्रयास करता है। इस अभ्यास को कक्षानुसार सरल अथवा कठिन बनाया जा सकता है। इस अभ्यास से बालको की वर्णनात्मक शक्ति का विकास होता है।

(4) **तार लिखना :**

कोई एक शब्द ले लिया जाए जैसे रामपुर। अब इन्ही चार शब्दो के आधार पर तार लिखा जाए। तार का प्रत्येक शब्द क्रमानुसार इस शब्द के अक्षरो से आरभ होना चाहिए। अब समाचार यह भेजना है कि रामू ने महेन्द्रनगर जाकर पुरस्कार जीता है। तार भेजने वाले का नाम है रनजीत। यह सूचना इस प्रकार लिखी जाएगी

राजू
महेन्द्रनगर
पुरस्कार जीता, रनजीत।

(5) **अक्षर कहकर शब्द निकलवाना :**

इसमे भी बालको को दो दलो मे बाट लिया जाता है। अब एक दल मान लीजिए कहता है प दूसरा दल तत्काल ही कहता है 'पवन'। अब पहला दल

तुरन्त ही 'न' से आरभ होने वाला शब्द कहता है 'नभ'। अब दूसरा दल 'भ' से आरभ होने वाला शब्द कहेगा। इस प्रकार खेल आगे बढता जाएगा और बच्चो का शब्द-ज्ञान भी विकसित होता जाएगा।

(6) **उचित उत्तर निकलवाना :**

इसमे एक वाक्य मे बात कहकर उसका कारण दिए गए अनेक कारणो मे से ढूढकर निकलवाना। जैसे

तुलसीदास जी श्रेष्ठ कवि थे, क्योकि

(1) उनकी स्त्री ने उन्हे उपदेश दिया था।
(2) वे काशी मे रहते थे।
(3) उन्होने अनेक काव्यो की रचना की है, आदि।

(7) **अक्षरो के पत्ते खेलना :**

पुराने ताश के पत्तो के ऊपर कागज चिपकाकर उन पर एक-एक अक्षर लिखकर उन्हे फेट दिया जाए। फिर दो, तीन या चार बालको मे उसे बाट दिया जाए। पत्ते पा चुकने पर प्रत्येक बालक क्रमश एक-एक पत्ता चलेगा और प्रत्येक आगे वाला बालक यह प्रयास करेगा कि वह ऐसा पत्ता डाले जिससे पहले पडे हुए पत्ते के ऊपर मिलाकर एक पूर्ण शब्द बन जाए। शब्द कम से कम तीन अक्षरो का होना चाहिए। यदि पूर्ण शब्द बन जाए तो बालक उन सब पत्तो को उठा सकता है, जिनसे शब्द बनता है।

(8) उलटा-सीधा एक समान :

यहा अधूरे वाक्य देकर उन शब्दो से उस रिक्त स्थान को पूर्ति करवाई जा सकती है जिन्हे उलट-पलट कर पढने पर भी शब्द वही रहता है।

	वाक्य	उत्तर
1	वह आजकल सीख रही है।	नाचना
2	वह विदेश यात्रा के लिए द्वारा जा रहा है	जहाज
3	भारतवर्ष मे के कई कारखाने है।	रबर
4	बिजली का दूसरा नाम भी है।	तडित
5.	लकडी . से जोडी सकती है।	सरेस
6	उडीसा का एक प्रसिद्ध नगर है।	कटक
7.	आजकल बहुत महगा हो गया है।	कनक
8	अधिक बच्चा प्राय बिगड़ जाता है।	लाडला
9	मैंने आपकी कहानी का भाषा मे अनुवाद किया है।	मलयालम
10	उसका चेहरा अपने पिता की तरह है।	हूबहू

(9) मुहावरो का उलट-फेर

इसमे मुहावरो को उलट-फेर कर रख देते है और बालको से उन मुहावरो को बताने के लिए कहते है

1 **बडे छोटे नाम दर्शन और**

नाम बड़े और दर्शन छोटे

2 **बराबर काला भैंस अक्षर**

काला अक्षर भैंस बराबर

3 तोते के हाथो उडना

हाथो के तोते उडना

4 बास उल्टे बरेली जाना

उल्टे बास बरेली जाना

5 बुरा अच्छा बदनाम बुरा

बद अच्छा, बदनाम बुरा

6 नाच टेढा आगन जाने न

नाच न जाने आगन टेढा

7 पहाड ओट की तिल

तिल की ओट पहाड

8 मुह उतनी बाते जितने

जितने मुह, उतनी बातें

9 जैसा वैसा भेष देश

जैसा देश, वैसा भेष

10 मार बैल मुझे आ

आ बैल मुझे मार, आदि

(10) सामान्य ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न

इस खेल मे सामान्य ज्ञान से सबधित एक प्रश्न के आगे कई उत्तर दे दिये जाते है और बालको से उचित उत्तर बताने के लिए कहा जाता है

1 ने सिद्ध किया है कि मनुष्य योनि बन्दर योनि के बाद आती है । (डाल्टन, इमरसन, डार्विन)

2 "यदि पेड-पौधो को कोई नुकीली चीज चुभोई जाए,

तो उन्हे भी पीडा होती है।" इस कथन की पुष्टि प्रसिद्ध वैज्ञानिक ने की है।
(प्रीस्टले, **जगदीशचद्र वसु**, लेवोशिये)

3 को भारतीय राष्ट्रीय काग्रेस का पिता माना जाता है। (महात्मा गाधी, पडित नेहरू, **एलेन ग्रौक्टा-वियम**, ह्यूम)

4 कोहनूर हीरा सर्वप्रथम के सिर पर सुशोभित हुग्रा था। (रणजीतसिंह, नादिरशाह, **शाहजहाँ**)

5 भारत के दो नोबुल पुरस्कार विजेताग्रो मे से एक . भी थे। (महात्मा गाधी, सरदार पटेल, **रवीन्द्रनाथ टैगोर**)

6 का मत है कि यदि सब प्राणियो की सब सन्ताने ज़िन्दा रहती तो ससार मे तिल रखने को भी स्थान न मिलता। (**डार्विन**, केवेंडिश, जगदीशचद्र वसु)

(11) बूझो तो जानें·

छोटी कक्षा के बच्चो के लिए कुछ सरल पहेलिया दी जा सकती है, जिनसे उन्हे थोडा सोचने का समय मिल सके।

1 वह कौन-सा जानवर है जो बन्दरगाह मे रहता है ? (**बन्दर**)

2 वह क्या चीज़ है जो रेल मे दो ग्रौर मोटर मे तीन होती हैं ? (**ग्रक्षर**)

3 वह क्या चीज़ है जो दिल्ली से मेरठ तक बिना चले-फिरे ग्राती जाती है ? (**सड़क**)

(12) क्या तुम्हें मालूम है ? :

विभिन्न देशो की राजधानी के नाम बच्चो को मालूम होने चाहिए । एक गड-बड ढग से देशो और राजधानियो का नाम देकर उनसे रिक्त स्थानो की पूर्ति कराई जा सकती है

क्रम संख्या	देश का नाम	(राजधानी)	सही उत्तर
1	कनाडा	(दिल्ली)	ओटावा
2	मिश्र	(ब्राजीलिया)	काहिरा
3	ब्राजील	(विलिगटन)	ब्राज़ीलिया
4	अर्जेन्टाइना	(जकार्ता)	ब्यूनस आयर्स
5	ऑस्ट्रेलिया	(तेहरान)	कैनेबरा
6	न्यूजीलैंड	(अकारा)	विलिंगटन
7	हिन्देशिया	(ओटावा)	जकार्ता
8	ईरान	(कैनेबरा)	तेहरान
9	टर्की	(ब्यूनस आयर्स)	अकारा
10	भारत	(काहिरा)	दिल्ली
11	हॉलैंड	(मास्को)	हैग
12	डेन्मार्क	(मैड्रिड)	कोपेनहेगन
13	स्विटज़रलैंड	(हेग)	बर्न
14	स्पेन	(कोपेनहेगन)	मैड्रिड
15	रूस	(बर्न)	मॉस्को

(13) इतिहास मे महापुरुषो के कथन

इतिहास पढने वाले बच्चो से इस प्रकार के उत्तर निकलवाए जा सकते हैं ·

1 "यदि लडने की हिम्मत नही है, तो चूडिया पहन लो !"
(अहिल्याबाई होल्कर)

2 "अब जीतने के लिए कोई भी देश बाकी नही रहा"
(सिकन्दर)

3 'हे अल्लाह ! तू मेरी जांन ले ले, पर मेरे बच्चे की जान बख्श दे।"
(बाबर)

4 "बचेगे, तो और भी लडेगे।" (महादजी शिन्दे)

5 "मैं मूर्तिया बेचने नही, तोडने आया हूँ"
(महमूद गजनवी)

(14) खेल और खिलाड़ी

इस प्रश्नोत्तर मे बच्चे बहुत रुचि लेते है। खेलो के नाम देकर उससे सबधित भारतीय खिलाडियो के नाम पूछे जा सकते है

खेल	खिलाड़ी	उत्तर
1. बैडमिंटन	—	नन्दू नाटेकर
2 हॉकी	—	ध्यान चन्द
3. क्रिकेट	—	नवाब पटौदी
4 वॉली बाल	—	पी० के० नायर
5 कुश्ती	—	दारा सिह
6 बास्केट बॉल	—	बी० एन० शर्मा
7 पोलो	—	महाराजा जयपुर

(15) फलो और शहरो के नाम ढूँढ़ो :

छोटी कक्षा के बच्चो से कक्षा मे श्याम-पट पर

कुछ वाक्य लिखकर उनमे से फलो अथवा शहरो के नाम ढुढवाए जा सकते है

1 एक दिन एक ठठेरा अपनी बुआ की देगची कूट रहा था, कि तभी उसका एक मरखना बैल गले मे बँधी जजीर की एक कडी तोडकर भाग गया ।

2 है तो यह मकान पुरस्कार विजेता राना गफूर खाँ का ही, लेकिन इसकी चाबी काने रसोइये ने एक पठान को टकसाल मे दे दी थी ।

(16) क्या तुम जानते हो ?

कुछ नये प्रकार के सामान्य ज्ञान सम्बन्धी प्रश्न पूछकर बच्चो की जिज्ञासा को शान्त किया जा सकता है

1 वह कौन-सा पक्षी है जो अपने घोसले को जुगनुओ के प्रकाश से आलोकित रखता है ? **(बया पक्षी)**

2 वह कौन-सा जानवर है जो खडे—खडे सोता है ? **(घोडा)**

3 किस कीडे के अडे अँधेरे मे चमकते है ? **(जुगनू)**

4 वह कौन-सा फल है जिसे पकने पर यदि वृक्ष से न तोड़ा जाए तो वह फिर से कच्चा हो जाता है, और अगले मौसम मे दुबारा पकना शुरू हो जाता है ? **(बेल)**

(17) ये भी बताओ :

कुछ रुचिकर तथ्यो की ओर नन्हे-मुन्नो का ध्यान आकर्षित करने का यह एक तरीका हो सकता है । उनसे निम्नलिखित ढग पर प्रश्न पूछे जा सकते है

1 मोर कहाँ सोते है ? **(वृक्षो पर, झाडियो मे ?)**

2. दो इंच मोटी खाल किस जानवर की होती है ? (भैंस की, गैंडे की)
3 जिराफ क्या बोलता है ? (बोलता ही नहीं)
4 सिंह अधिक शक्तिशाली होता है या बाघ ? (बाघ)
5 ससार की सबसे बडी मछली कौन सी है ? (शार्क, ह्वेल)

(18) लेखक परिचय

कुछ प्रसिद्ध पुस्तको के नाम के आगे कई लेखको के नाम देकर बच्चो से सही उत्तर निकलवाए जा सकते हैं

1 आत्म-कथा	—महात्मा गाँधी	( )
	—डा० राजेन्द्र प्रसाद	(√)
	—पडित नेहरू	( )
2 इलियड	—शैक्सपियर	( )
	—होमर	(√)
	—हेनरी ह्वाइट	( )
3 हैमलेट	—बर्नार्ड शॉ	( )
	—रूसो	( )
	—शैक्सपियर	(√)
	—टॉमस हार्डी	( )
4 भारत-भारती	—सुमित्रानन्दन पत	( )
	—मैथिली शरण गुप्त	(√)
	—तुलसीदास	( )
	—'दिनकर'	( )
5. गीताजलि	—जयशकर प्रसाद	( )

		—सूर्यकान्त त्रिपाठी निराला	( )
		—रवीन्द्रनाथ ठाकुर	(√)
		—महादेवी वर्मा	( )
6	रामचरित मानस	—बाल्मीकि	( )
		—तुलसीदास	(√)
		—केशवचन्द्र	( )
		—वेद व्यास	( )
7	डॉ० जिवागो	—पर्लबक	( )
		—डिकेन्स	( )
		—बोरिस पास्तरनाक	(√)
8	मदर	—टॉल्सटॉय	( )
		—चेखव	( )
		—गोर्की	(√)
9	चरित्रहीन	—बकिमचन्द्र	( )
		—शरत चन्द्र	(√)
		—प्रेमचन्द	( )
10	गोदान	—प्रेमचन्द	(√)
		—सुदर्शन	( )
		—यशपाल	( )
		—जैनेन्द्रकुमार	( )

इस प्रकार के अनेक मनोरजक और बौद्धिक खेल हो सकते हैं, जिनकी एक लम्बी सूची दे सकना यहाँ सम्भव नही है, किन्तु यह सच है कि उपरोक्त सुझावों के अनुसार बौद्धिक एव रोचक कार्यकलापो द्वारा मात्रभाषा सिखाने के साथ-साथ सामान्य ज्ञान बढाने की ओर बालको की रुचि जागृत

की जा सकती है ।

शिक्षा मे बालक की रुचि का सर्वोच्च स्थान है, और इन सभी क्रियाकलापो एव विधियो द्वारा बालको की रुचि परिष्कृत होती है, अत निर्विवाद रूप से यह स्वीकार किया जा सकता है कि ये सभी सहपाठ्यक्रमी क्रियाए भाषा-शिक्षण का एक प्रभावशाली साधन बन सकती है ।

▱▱▱